सुरसती

भोजपुरी तिमाही

(शोध, रचना, संस्कृति आ पुरातत्व प्रधान)

भारतीभिः भारती सजोषा—ऋक्० 6/2/33

(उपभषवन के साथे भारती भासा सेवे लायक बिआ)

अमृता आत्मनः कला—भवभूति

(आत्मा के ऊ कला, जवन अमृता ह, कबो ना मरे)

जनवरी 2003

संपादक

डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद, सहसराम के

मुखपत्र

विषय- सूची

सम्पादकीय - ग्यान विग्यान के भासा ह मातृ भासा		शिव सरूप	१
अध्यातम : शरीर से परेम करे वाला परमतमा से परेम का करी -स्वामी शिवानंद जी 'तीर्थ'			
धरोहर :	स्वप्नवासवदत्ता	-नकिति	२
बतकही :	महतारी के बोली मे महतारी के दूध अस मिठास -डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा (डॉ० विप्र आ डॉ० विमल के बातचीत)		४-८
अनुगायन :	दुर्गासप्तशती से	-नकिति	८
	रिगवेद से	-'अलमस्त'	६
कविता :	मुक्तक	-अलबेला,श्रीभगवानपंडित, विद्यार्थी,विक्रमा,धीरेन्द्र, विश्वनाथ,विश्वंभर नाथ,विप्र,बटोही,माँझी,विद्यार्थी,कमल, आसिफ,मुकुल,रामप्रवेश, रामवचन, बरमेश्वर,चन्द्रविनोद	१०-१८
बाएन :	मगही कविता-पुजारी	-योगेन्द्र उपाध्याय	१६
कहानी :	समझौता एक्सप्रेस	- विद्याशंकर 'विद्यार्थी'	१६-२६
रेखाचित्र :	पहरपुर-एगो गाँव	...री ओझा	२६-३१
समीक्षा(चिठी में) :	गजरों का गजरा	- रामायण सिंह	३१-३२
अँकुराइल हँकार :	के सुनत बाटे	-सत्यनारायण उपाध्याय	३२-३३
टिप्पनी :	अत्रि	- नकिति	३३-३४
	जइसन के तइसन	-नकिति	३४
अइसन लागल जवन बुझाइल - चीठी पतरी			३४-३६

मूल्य :१५ रूपये।

सुरसती(तिमाही)

वार्षिक- ५०/ एगो १५/रु०

संपादकः डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

सहायकः विद्याशंकर 'विद्यार्थी'

रोहतास जिला भोजपुरी परिषद् के मुख-पत्र संपर्क - निराला साहित्य मन्दिर, बिजली शहीद, सहसराम, रोहतास (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

शिव सरूप विप्र जी के निधन

विप्रजी ने निधन से करीबन साठ सत्तर बरिस के भोजपुरी भासा के लिखात इतिहास ग्रंथ के उपसंहार पूरा हो गइल। उहाँ के हरदम शिव शिव रटत रहली हँ। सिव-सरूप हो गइलरहीं। एह कर्मयोगी के अपना जीवन में कुल्ही पुरुषार्थ अपने मिलल। उहाँ के परम गुरु स्वामी शिवानंद जी महाराज (गीताघाट के बाबा) से दीक्षित शिक्षित रहीं। बक्सर क्षेत्र में भोजपुरी भाषा आउर साहित्य के आंदोलन के रूप में लेके विकास करावे वाला राहुल जी के बाद उहें के स्थान रहे। जीवन के अखिरी समय तक उहाँ के सिंह लेखा दहाड़त रहि गइलीं। अब कोई साहित्यकार नइखे कतहीं लउकत जे समने सही के सही आ गलत के गलत मुँह पर कहे वाला होखे। भोजपुरी अकादमी में उहां के साथे काम करे के मोका मिलल रहे। उहाँ के अकेले ओहिजा के राजनीतिग्यन के खारा जवाब देके मुँह बन कर देत रहीं। कवनो विश्वनाथ के विषनाथ बनावत तनिको देरी ना लागत रहे। साहित्य सेवी लोग के आत्मनु कहि के संबोधित करत रहीं। उहाँ के परान ओही से प्रेरित होत रहे। साहित्य, आउर साहित्यकारन के अनेकन अखिल भारतीय स्तर से सभा-गोष्ठी के भी अद्भुत संयोजन के क्षमता उहाँ में रहे आउर रचना करे में भी कतहीं आलस ना। नाटक, कविता समीक्षा, लोकगीत के संकलन, अनुवाद, व्यंग्य जहवाँ कमी बुझाय भोजपुरी साहित्य में, अपने लिखे सुरु कर देत रहीं। अपने लिखना आ छपवाना आसान काम ना ह। कविता संगरह में मधुवन, नाटकन में वीरमंगल पांडे,मोती के घवद, वीर बाबू कुंवर सिंह, समीक्षा ग्रंथन में भारतीय संस्कृती में भगवान शिव, उहाँ के रचना कुशलता के परिचायक बा। दुर्गासप्तशती के भोजपुरी में अनुवाद उहाँ अइसन कम भइलवा। आपन अपने से' आ 'खैरातू खलीफा' उहाँ के बहुत प्रशंसित व्यंग ह। महाभारत के शांतिपर्व आ रामचरित मानस के भोजपूरी अनुवाद उहाँ के विद्वत्ता के भी परकासित करत बा। उहां के पूरा जीवन साहित्य सेवा आउर दवा बीरो द्वारा जनता जनार्दन के सेवा में बीतल। इहे पाठ जीवन में भद्र पुरुखन से मिलले रहे। एकरे के, शिक्षा के जीवन में उतरल कहल जाला। उहाँ के पिता-पितामह के महानता के अपनवलीं। उहाँ के पूरा निर्माण ओही से एगो सम्पूर्ण मानव आउर साहित्यकार के रूप में भइल। खुशी के बात बा कि अतना लमहर आयुष पा के उहाँ के कबो बीमार परल ना सुनाइल। उहाँ के सुजोग एकल साहित्यिक पुत्र प्रतिष्ठित वरिष्ठ अधिवक्ता घनश्याम जी उहाँ के साहित्यिक आध्यात्मिक परंपरा के साँचा वाहक बानीं; ओह साहित्यिक रिक्थ के संचे में कवनो तरह से कोताही ना होई। विप्र वत्सल निधि के स्थापना, उहाँ के नावँ पर एगो पुरस्कार, साहित्यिक शोध संस्थान के स्थापना विप्रनगर के सड़क के नामकरन, साँचो के श्रद्धांजलि होई। स्वतंत्रता संग्राम आ भोजपुरी खातिर संघर्षशील एह परमपूत आत्मा के सभ साहित्य प्रेमियन के शतशः प्रणाम।

धरोहर - **शरीर से परेम करे वाला परमात्मा से परेम का करी**

स्वामी शिवानंद जी तीर्थ

दुर्गा जी के पूजा के बहाना से रउआ सभ लइका लोग से लेके बूढ़, पढ़ल सभे एहिजा खड़ा बा

www.bhojpurisahityangan.com

दिन भर बोले के आजु परल बा, गाला फँस गइल बा। जरा मोट ढंग स बिचार करे के। अतना अदिमी खाड़ा चाहे बइठल बाड़न सभकर शकल एक जइसन नइखे। कपड़ा, कद, सरीर के मोटाई, रंग आ सभकर काम अलग-अलग ह। मतारी पढ़ल होखस चाहे ना लेकिन उनुकर धरम एके ह। हँ, नेम जरूरे अलग -अलग ह। विदयार्थी के अलग नेम बा विद्वानन के अलग। एह एक प्रेम आउर अनेक नेमें भी एगो सिच्छा बा। विदया सिलेट में ना होखे, श्यामपट में ना होखे, ई कुल्ही माध्यम भर ह। दुरुगा माँ के भीरू, उनका समने जदि कोई आवता त ऊ ओकर भाव ह। एह आवे से, बइठे से, संस्कारन में संशोधन होला। संशोधन करे के ई अवसर आवेला। जब हमनी के उपासना करीला जा त उपास्य के, इष्ट के, नजदीक जाए के मोका मिलेला। फिरु उनुका के अपना हृदय में ले आ के बइठाई ला जा। उनुकर गुन आ आकार के जरूरत हमनी के होला।

कुछ अदिमी अइसन सोचेलन कि परमतमा त निराकर हवन। तब मूर्ती के जरूरते का बा ? अगर परमतमा साकार हो जइतन तऽ ? मूर्ती से जादा आछा त मानुस सरीरे बा पत्थल से आछा त ई होइत कि एगो चलत फिर मूर्ती बन जाइत, अदिमी के सरीर के। लेकिन सोचीं त सभ माता लोग दुरुगा के अंस ह। सकती के अरथे ह संगठन। जइसे ई आयोजन एगो अदिमी के बस के बात नइखे। लेकिन जदि ढेर लोग एह काम के अपना हाँथ में ले-ले लाड़न त ऊ काम जादा आसान हो जाता। सकती के उपासना के इहे मतलब ह, नजदीक जाए के। जइसे भोजन सगने आ गइल। जदि कुल्ही अँगुरी अलग-अलग रहिहन त कवर उठिके मुँह में ना जाई। भोजन ना हो सके। ओहनी के छोट-बड़ होखले आज भोजन के कवर मुँह में जाए के कारन बा। एह से छोट बड़ होखल प्रकृति के नियति ह। एह से उपासना से हमनी में अधिकार बढ़ेला कि हमनी के अहंकार छोड़ देवे के चाही। एकरा से सकती संगठित होला आउर सहनशीलता आवेला। संपनिशाली के धीरे-धीर होखे के चाही सकती संचय बिना वीरता ना आवे। सकती के परसार धन जन में सगरो होला। साँच पूछीं त उत्सव लइकन के चीज ह। बूढ़ खातिर ऊ उत्साह के बिषय ना होखे। लइकन में अनुकरण के प्रवृत्ति होला, एह से धमकावे के बदला में प्रेम के प्रयोग करे के चाही। जब हमनी के लइकन से प्रेम ना कर सकीं त बुढ़वन से का करब। एही तरह से देस से प्रेम करत-करत परमतमा से प्रेम हो जाला। प्रेम एक होला खाली पदारथन के अनुसार ओकर परिणति बदलत रहे ला। एही तरह से जीवन के उद्देश्य भी। अनेक क्रियन्ह के एक लक्ष्य में जुड़ल बा परम से प्रेम कइल। शरीर से प्रेम करे वाला परमतमा से प्रेम ना कर सकें।

(भोजपुरी में नकिति।)

स्वप्नवासवदत्ता के कथा (पूर्वांक के बाद)

(२) *प्रस्तुतकर्ता - नकिति*

महाराज उदयन के बचपने से शिकार के बहुत सवख रहे। ई सवख बिपत्ति के समया में भी

www.bhojpurisahityangan.com

तनिको कम ना भइल। जवना दिन वासवदत्ता के साथे जौगन्धरायन के ई कुल्ही बात भइल रहे, ओकरा दोसर के दिन उदयन पास के एगो जंगल में शिकार खेले चल गइलन। साँझ के जब ऊ लवट के अइलन त देखत बाड़न कि हमार कुल्ही शिविर जर के राख हो गइल बा। जवना मंत्री आ सेनापति के ऊ शिविर में छोड़िके गइल रहन ऊ सभ बइठ के रो रहल बाड़न आउर उनुका के देखत हाहाकार करे लगलन। पुछला पर उदयन के पाता लागल कि आग लाग गइल आ कुल्ही शिविर भसम हो गइल। अधिका दुख तब भइल कि एही आग में रानी वासवदत्ता भी जरि के राख हो गइली। जौगंधरायन भी ओह में बचावे खातिर कुदलन लेकिन उनुकरो कतहीं आता पाता नइखे।

ई परम दुखद समाचार सुनिके महाराज उदयन भारे सोक के मुरछित होके भुइयाँ पर गिर गइलन। कोई मुँह पर पानी देवे लागल, कोई पंखा से हवा करे लागल। महाराज खातिर वासवदत्ता प्रानो से अधिका प्रिय रही आउर बीपत में ऊ सभ से अधिका सानुत्वना देत रही। जौगंधरायण भी राजा के दहिना हाँथ रहन। समूचाराज के भार उन्हुके पर रहे। उनुके बल पर राजा निहिचंत रहिके शिकार आ भोग विलास में लागल रहत रहन। प्रियतमा पतनी आ विसवासी हितैषी के एके साथे वियोग के सोग से पागल लेखा उनुकर अवस्था हो गइल। अब एगो रुमण्वान् सेनापति सहोदर भाई निअन बराबर उनुका साथे रहे लगलन। सेवा आ सान्त्वना दूनो से उनुका के प्रसन्न राखे खातिर बराबर कोशिस करत रहस।

ओने जौगन्धरायन एगो परिव्राजक ब्राह्मन के भेख धारन कइके आउर वासवदत्ता के अपना साथे लेके मगध ओरे चल देलन। रसता में जे पूछे त कह देस कि वासवदत्ता हमार बहिन हई। इनिकर पति विदेस चल गइल बाड़न इनिका के राजकुमारी पद्मावती के सेवा में रखे खातिर लेके जा रहल बानीं।

ओह घरी मगध के राजधानी राजगृह में रहे। पाटलिपुत्र ना बसल रहे। राजगृह पासे एगो तपेसवी के आस्रम रहे। जौगन्धरायन वासवदत्ता के ले-ले ओही आस्रम में जा पहुँचलन। ओहिजा उनुका कुछ हाला सुनाई पड़ल। कुछ अदिमी जोर से कहत रहन हटऽ जा, रहता छोड़ऽ जा। वासवदत्ता के आस्रम में 'हटो बचो' सुनिके बड़ा आश्चर्य भइल। ऊ जौगंधरायन से पुछली-आर्य ! ई कवन गँवार ह जे एह पवित्र आस्रम में भी नगर के राजमार्गन नीअन लोगन के रसता से हटा रहल बा, तपसिअन के शान्ती भंग कर' रहल बा। आ जौगंधरायन के भी ऊ लोग के अनुचित व्यवहार पर अचरज आ दुख भइल। ऊ कहले कि अइसन लोग के धिक्कार बा जे अपना वैभव के गर्व से आन्हर हो के निरीह आउर शान्त तपस्वियन के आस्रमों में झुक के नइखन चल सकत। ई हटावे बढ़ावे वाला धरम के मारग से हटि के चले वाला हवन। वासवदत्ता पुछली कि काहें आर्य, का ई लोग हमरो के भी एहिजा से हटा दीहें न ? जौगंधनारायन कहलन कि देवी, जे नइखे जानत ऊ देवतो के अवग्या करेला। फिरु हम त मनुष्ये ठहरलीं। इसवर करस, हमार दुख आ विपत एही तरहा से हटावल जाय। वासवदत्ता के ई लोग के आचरन से जतना दुख भइल ओतना रसता तय करे के परिसरमो से ना भइल रहे। जौगंधरायन समुझवलन कि रउआ त सभ तरह सुख भोग के परित्याग कर देले बानीं। फिरु हमनी के जवन

www.bhojpurisahityangan.com

रसता पकड़ले बानीं जा ओह में अइसन कतना बात सहे के परी, हमनी के त जानबूझ के कठोर बरत धारन कइले बानीं जा एह से बेकार दुखी मत होईं। जब रउआ स्वामी के विजय होई, तब रउआ इहे कुल बातन के खुसी खुसी इयाद करब। अतने में दूगो समने से राजा के अनुचर आवत लउकल सन। उहे दूनो सभका से रहता छोड़े के कहत रहसन। ओहनी के पाँछा से कंचिकी भी दउड़ल अइलन आ सेवकन के डाँटे लगले। एहिजा भी तूँ लोग राजमार्ग अइसन सभका के हटइबऽ जा। देखत नइख जा ई तपेसवी लोग के आस्रम ह। एहसे महाराज के निन्दा होई। एहिजा कवनो तरह के अशिष्ट आचरन सोभा न दीही दूनो अनुचर 'जवन आग्याँ' कहिके सानत हो गइलनस। अब जौगंधरायन कंचुकी के बहुते समुझदार आ सज्जन जानिके जाके पुछ्लन कि लोग रसता से काहें हटावल जा रहल बाड़न ? कंचुकी समुझलन कि एही आस्रम में रहे वाला कवनो तपसिए हवन। एह से हाँथ जोर के कहलन कि तपस्वी! हमार महाराज दर्शक के मतारी आजुकाल आस्रमे में रहत बाड़ी। उनुके दरसन खातिर राजकुमारी पद्मावती एहिजा आइल रही। अब उनुका आग्याँ से लवट के राजगृह जा रहल बाड़ी। लेकिन जाए से पहिले ऊ तपस्विनी के दरसन खातिर एने आइल बाड़ी। अबहिन ऊ आस्रम में ठहरिहन। ई सभ लोग उनुके साथे आइल बा। ई लोग आस्रम के नियम नइखे जानत एही से सेवक लोग के रसता से हटावत रहल ह। अब हम मना कर देली हँ।

जौगंधरायन एह बात से मने मने बहुते प्रसन्न भइलन कि इहाँ सहजे में राजकुमारी पद्मावती हमनी के मिल गइली। अब इसवर चाहिहन त कुल्ही कारज बहुते असानी से हो जाई।

✪

टिप्पनी मं कंचुकी

ओहघरी वूढ़ सच्चरित्र ब्राह्मन राजा के इहाँ रहत रहन जे भीतर आवत जात रहन। ई लोग लामा अँगरखा (कंचुक) पहिरत रहे, एही से ई लोग कंचुकी कहात रहे।

✪

स्व० डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र ' से डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल के

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के संदर्भ में एगो संक्षिप्त बातचीत

महतारी का बोली में महतारी के दूध अस मिठास होला

प्रस्तुति डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

आजु भोजपुरी बोली नइखे रहि गइल, बलुक भाषा के रूप में एकर अस्तित्व लउकता। एकर साहित्य कवनो भारतीय भाषा के साहित्य के सामने ठाढ़ होखे में अपना के कमजोर नइखे महसूस करत, बलुक चुनौती देबे खातिर तैयार बा विश्वविद्यालय के सर्वोच्च कक्षा (एम. ए.) खातिर भी कुछ विश्वविद्यालय में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पाठ्यक्रम स्वीकृत बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के ई विकास अचके में नइखे हो गइल, बलुक भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर समर्पित भोजपुरी भाषी बुजुर्ग विद्वान आ साहित्यकारन के लगातार श्रम-साधना के बाद एकर ई सरूप तेयार भइल बा। आज ई दुक्ख आ चिंता के विषय बा कि आजुओ बुजुर्ग साहित्यकारन के त पीढ़ी भोजपुरी साहित्य के भंडार भरे खातिर आपन लेखनी लगातार चला रहलि बा लेकिन आजु के कर्णधार पीढ़ी असकतिया रहलि बिआ, कुछ लोगन के छोड़िके बाकी सभे सपना में अन्हुआत आ बरात लउकता।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के नींव से महल तक के निर्माण में जवना भोजपुरी साहित्यकारन के सर्वाधिक जोगदान बा, ओहीं में से एगो रहलीं हँ प्रख्यात, पत्रकार साहित्यकार स्व० डॉ. कमला प्रसाद मिश्र विप्र। कविता, कहानी, निबंध, नाटक उपन्यास आदि साहित्य के लग भग सभे विधन पर इहाँ के कलम चलल आ जमके चलल। उहाँ के लेखन में अविराम गति रहलह भोजपुरी भाषा आ साहित्य के संदर्भ में भइल उहाँ से बातचीत के कुछ अंश नीचे प्रस्तुत बा --

विमल :- १. विप्रजी, अपना पहिल रचना के जवन आनंद रचनाकार लेलन, बाद में अतना आनंद कवनो रचना पर शायदे उनुका भेंटाला। ए से चाहतानी कि हमनी के बातचीत एहिजे से शुरु होखो। तनिको जे स्मरण होखे त पहिल रचना के बारे में हम कुछ जानल चाहब।

विप्रजी :- पहिली रचना सन् सत्ताइस के रहे, तवन नइखे। सन् १९३३-३४ का अलावे अब तक के भोजपुरी रचना बाड़ी स। पहिले रचना देवस्तुती के रहे भा ३३-३४ के भी कई रचना ओइसने बाड़ी स। जागृत जीवन, पत्रिका के संपादक का आग्रह पर १५ अगस्त १९३३ के रचना अइसे रहे-

"हे नाथ त्रिपुरारी बड़ि आशा बा तोहारि देव
समय आइ जाई त हमें ना भुलाइबि।
डोलति बा नाइ हमारि बीच महाधारि में
होइ के सहायक रउआ ए के पार लाइब।
रउए दया से नाहिं दुर्लभ बा कवनो बतुस
रउआ दयालु हवीं दया के देखाइबि।
कमलापति कहत कइके कृपा देव
नाथ हाथ धइके साथ बइठाइबि।।"

प्रेरना रहे अपना छोटका चाचा पं. जगतानन्द मिश्र के भजन गाइके हमरो से गवावल आ जब लिखे चलि आइल त उहाँ का लिखावहू लगलीं।

विमल :- २. रउँआ जबसे लिख रहल बानी, शुरूए से जे खाली हिन्दीए में लिखले रहितीं त ए में कवनो शक ना कि हिन्दी साहित्य में राउर एगो बढ़िया स्थान रहित; ई केहुओ रउरा साहित्यिक क्षमता आ श्रम के देखिके कह सकता। अइसन में ओह घरी रउँआ भोजपुरी में लिखे शुरु कइलीं। भोजपुरी ओहघरी त निछाँछ बोली रहे। आखिर कवना-शक्ति के वशीभूत होके रउँआ भोजपुरी लेखनी में प्रवृत्त भइलीं ?

www.bhojpurisahityangan.com

विप्रजी :- हमारि रचना हिन्दी आ भोजपुरी में लगभग बराबरे बाड़िन स। मातृभाषा का नाता से भोजपुरी के विशेष आदर दीक्षा गुरु के विचार ले उत्तम बा।

३. रउरा आरंभिक लेखन काल में भोजपुरी के का स्थिती रहे ?

अधिकांश लोग भोजपुरी बोले या लिखेवाला के भकोल समझत रहे आ ढेर लोग कहे जे भोजपुरी का विकास से हिन्दी के हानि होखी - एह से ढेर लोग थथमले रहि गइले।

४. रउँआ अपना भोजपुरी लेखन का अलावे एगो भोजपुरी साहित्य मंडल भी तैयार कइलीं आ अब तक ओह संस्था के निबहा रहल बानीं। हम चाहब कि रउँआ भोजपुरी साहित्य मंडल के शुभारंभ के तनिका जानकारी दिहितीं आ साथे आपन एह पर विचार भी कि वर्त्तमान में एह मंडल के कवना संदर्भ में उपयोगिता रह गइल बा।

भोजपुरी साहित्य मंडल के स्थापना सन् १९४४ में भोजपुरी साहित्य संसद का नाम से बक्सर में भइल रहे। फागू राम, रामनरेश लाल, अनुग्रहनारायण लाल, ब्रजकिशोर चौबे, कमला बाबू वकील, पं. कपिलदेव मिश्र आ मंगलाचरण उपाध्याय आदि एकर सदस्य रहें। सन्१९५१ का सावन में बिहार आ उत्तर प्रदेश के भोजपुरी स्नेही लोग बक्सर विद्या मंदिर में जवराइल रहन। हमन लगभग एक दर्जन भोजपुरी स्नेही का निहोरा पर। ओह बड़हन समारोह के अध्यक्ष रहीं सांस्कृतिक विद्यापीठ, पटना के स्वामी मंगलदेव जी आ उद्घाटनकर्त्ता बलिया के बाबू मुरली मनोहर जी। ओह दूदिवसीय समारोह में एगो कार्यकरिणी समिति बनलि, जवना के अध्यक्ष चुनइले बलिया के डॉ. रामविचार पांडेय आ मंत्री में फागू राय, मंगलाचरण उपाध्याय आ हमार नाम रहे।

राजपुर अधिवेशन में संत खाकी बाबा अध्यक्ष चुनइलीं। उहाँ का बाद अध्यक्ष रहन प्राचार्य जितराम पाठक आ तबना के बाद हमरा के ऊ भार दिहल गइल। गत साल वार्षिक अधिवेशन बक्सर गीता मंदिर में हमरे अध्यक्षता में संपन्न भइल। हम त्याग पत्र दिहलीं आ साहित्य मंडल में स्थानीय कला परिषद् सम्मिलित भइल। एगो कामचलाऊ समिति बनलि जवना के अध्यक्ष रामजी पांडे अकेला आ मंत्री भारद्वाज जी चुनइले। हमरा से संरक्षक बदे आग्रह कइल गइल त हम स्वीकार कइ लिहलीं।

एही संस्था का छत्रछाया में राहुल जी का निदेश पर प्रथम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन सम्पन्न भइल भोजपुर में। ओह समारोह के अध्यक्ष प्रयागवासी पं. उदयनारायन तिवारी रहीं आ मुख्य अतिथि विनोदानंद झा। महामंत्री विश्वामित्र कॉलेज, बक्सर के प्राचार्य परमाशंकर तिवारी रहीं। उहीं के बक्सर से विदाई आ पं. मंगलाचरण के संसद से जुदाई का चलते अखिल भारतीय काम बाला ठप पड़ि गइल। ओह संस्था अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन से उपाध्यक्ष दुर्गाशंकर बाबू एगो पुस्तको प्रकाशित करवले रहन जवना के प्रति हमरो पास बा।

साहित्य मंडल के रजत जयंती देवकुली (भोजपुर) में संपन्न भइलि बलिया का प्राचार्य केशवानंद जी का सदारत में। एह संस्था से लगभग पचास भोजपुरी विद्वानन के सम्मानित आ पुरस्कृत कइल गइल बा। मुख्य अतिथि आ उद्घाटनकर्त्ता लोग में विद्वानन का

www.bhojpurisahityangan.com

अलावे बिहार राज्यआ केन्द्र के मंत्री लोग या उच्चतम न्यायलय के मुख्य न्यायाधीश भी पधारि चुकल बाड़े। एह संस्था से दर्जनन पुस्तक प्रकाशित बाड़ी सँ। आचार्य गणेशदत्त किरन के 'किरन बावनी' नामक पुस्तक पर पहिले पहल ५०१/रू० के पुरस्कार सुलभ भइल रहे।

५. रउरा लेखन प्रकाशन के दौरान कवनो अइसन घटना, जवना के रउँआ भुला ना पावत होखीं ?

हमार छोट चाचा पं. जगदानंद मिश्र हमरा के बड़ा प्यार करत रहीं। हम थेथराह बोलत रहीं तबे से उहाँ का हमरा से भजन गवाईं आ ई कहिके जे एगो गीति पिताजी के सुनावे के बा, मामी के सुनवावे के बा आ नानी के आदि-आदि। हम जोर मार चिचिआइ के गाईं आ उहाँ का खूब आनंद लीं। गोस्वामी तुलसी दास के 'राम भजो मन राम भजो न तो आखिर जन्म अकारथ' आदि पद चचेंजी रटवले रहीं।

गाँधी जी वाली आन्ही में पढ़ाई छुटला का बाद थेघ मिलल काशी में। छात्र राष्ट्रीय संस्था के आ खद्दर का पैंटकोट पर पहुँचल रहीं पटना विश्वविद्यालय के उपकुलपति सच्चिदानंद सिन्हा किहाँ। हमरा नाम के कार्ड भी छपल रहे। हमारि पारी परलि अंत में आ उहाँ का कार्ड देखते पुछलीं- 'आप कहाँ से आये हैं ? हम - 'बनारस से'। उहाँ का - आपके प्रार्थनापत्र पर पता है सोनधरसा-बक्सर और जिला शाहाबाद ? हम-'हाँ मेरी जन्मभूमि बिहार है लेकिन रैताहूँ बनारस।' उहाँ का-'कवन सोनवरसा जी ?' हम - 'दैट इज क्वाइट नियर फ्राम द बक्सर टाउन एण्ड द गंजेज रिवर प्लीज।' उहाँ का- ओही सोनवरसा के पं. शिवनंदन मिश्र 'नंद' जी हाकिम रहीं, उहाँ के सात गो नाटको खड़गविलास प्रेस पटना से प्रकाशित भइल रहन स आ चउदह भाषा के जानकार का साथ नामी जोतिषिओं रहीं. उहों के अपने जानीले ? हम- 'येस' दैट जेंटिलमैन वाज माइ फादर प्लीज।' उहाँ का - 'डुमराँव का नियरा के 'मुरार' के नाम रउआ सुनले बानी ? हम - 'येस प्लीज आ....। उहाँ का- 'धत्त' बिलाइत उलाइत घूमि आइल बानीं का ? दूगो अंगरेज अंगरेजी में बतियावेला आ बंगाली बंगला में बतियावेला। रउआ अंगरेजी का अलावे रैता हूँ आ हाँ कहाँ से सीखि लिहलीं ? महतारी का बोली में महतारी का दूध अस दुर्लभ मिठास होखेला, तबन कइसे भुला गइलीं। ?

हमरा घमंड रहे जो हमरा मतिन बुद्धिमान का बतकट बड़ले के बा। उहाँ का डाँटला पर हमरा ओठे दोवर हो गइल रहन स। हम अकुताइले कहलीं जे अच्छा अब मैं चला।' तले उहाँ का फिर डँटली आ अपना रसोइया से कहलीं जे 'इहाँ' का हमार मित्र के लड़िका हई, भोजन बनाइके खिलाइ दे तब ले हम आवत बानीं। ओहिजा ठहरल हमरा कटावन लागत रहे बाकी करीं का ?

उहाँ का आइके प्यार से हमरा के मातृभाषा के दीक्षा दिहलीं आ ओही का बाद से काशी में कई साल तक हिन्दी पत्रन का संपादन में रहला पर भोजपुरिए बोलत रहीं। भारतीय संविधान पर अध्यक्ष का नाते उहाँ से दस्तखत करावे देशरत्न राजेन्द्र बाबू पटना आइल रहीं। दर्शन होते उहाँ का हाथ जोरी के प्यार भरल प्रेरना दिहलीं। ओह दीक्षा गुरु के हमार सादर स्मरन बा।

www.bhojpurisahityangan.com

६. अंत में हम भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर राउर एगो विशेष टिप्पणी चाहवि आजु भोजपुरी कवना रूप में बाड़ आ एकर का रूप होखे के चाहीं ?

भोजपुरी देश का अलावे बिदेशन में भी आपन मरजाद बनवले बा, अनादर बाड़ त प्रशासन से। **भोजपुरी लिखेवाला लोग पढ़त कम बा आ लिखत बाटे लोग अधिका। बिना अध्ययन के लेखन खटतूरस हो जाला। श्रृंगार रस बाउर ना होखे बाकिर कजरिया, अँचरिया, सेजरिया आ चुनरिया आदि संत कबीर आदि का भावना अनुसार होखे त अच्छा।** अब तक हर विधा पर विद्वान लोग कलम चला रहल बा आ हमहन के लेसलि दियरी मसाल हो गइलि । एकरा के जनावे बदे एह जुग के स्वार्थी राजनेतन के उकसावल जरूरी बा। भोजपुरी के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी आवाज उठाना बा। संविधान का अनुसार विधायक, सांसद आ राष्ट्रपति के चुनाव हो जाना, जवना में वयस, शिक्षा , सदाचार आ जनसेवा के कवनो जरूरत नइखे आ हिन्दी का लिलार के बिंदी मद्धिम काहें ? जे राष्ट्रभाषा नइखे जानत, चुनाव में या विदेश दूत भाषा में मति जाउ। भोजपुरी के आदर ना देवेवाला के निन्दा कइल जाउ आ ऊहो ना सुनाइ तब जवन भाषा सरकार पसंद करति बा तवना के उपयोग जरूरी बा।

स्व० डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र',
द्वारा पं. घनश्याम मिश्र। सोनवरसा, बक्सर (बिहार)
प्रस्तुति- डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल, कोलकाता- ७००१०६

एगारहवाँ अध्याय : दुर्गासप्तशती

शरनागत के दुख हरे वाली, देवी प्रसन्न हम पर होख ऽ।
एह अखिल जगत के हे माता, हमपर प्रसन्न अब तूँहोख ऽ।
होके प्रसन्न अब अखिल विश्व के हे देवी कल्याण कर ऽ।
हउ तू ईश्वरी सभेजग के माइ हमार कल्याण कर ऽ।
तूँ एक जगत आधारभूत पृथिवी हमार कल्याण करऽ।
तोहरा बल के बा कहाँ पार तूँ जल सरूप इस्थित होखऽ।
हो के अनंत बल पूर्न वैष्णवी कारण जगत परामाया।
तूँ मोहित कइ रखलू जग के, तव कृपा मोच्छ पावे काया।।
विद्या कुल्ही तोहरे भेदे, जग नारि रूप सभ बा तोहार।
तू स्वयं परावाणी सरूप, सभसे पूरित सभ कुछ तोहार।।
जब सर्वभूत तूँ ही देवी, तूँ सरग मुक्ति देवे वाली।
के बा जे अस्तुति करे मातु, कवनो उकती ना करे वाली।।
बइठल बाड़ू तू जन मन में तूँ बुद्धि रूप से माँ सकार।
अपवर्ग सरग देवे वाली हे देवी तोहके नमस्कार।।
ई कला काष्ठ आदिक सरूप, परिणाम प्रदायिनि जे सकार।
उपसंहार शक्ति के तूँ सरूप, तू नारायिणि के नमस्कार।।
सभ मंगल के मांगल्यरूप, हे शिवे सर्वदात्री सकार।
हे शरणदायिनि त्रिनयनां, गौरी नारायणि नमस्कार।।
शरणागत दीन दुखी जन के परित्राण परायणि तू अधार।
सभ संकट हरण करऽ देवी हे नारायणि ल नमस्कार।।

www.bhojpurisahityangan.com

तूँ हंस युक्त बइठलु विमानपर ब्रह्माणी रूपा सकार।।
जल छिड़के लू कुस के लेके, हे नारायणि ल नमस्कार।।
तिरसूल चनरमा सरप धरे, बैला वाहन माँ वा उदार।।
तू हऊ महेसरि रूपमयी हे सामिनि तोह के नमस्कार।।
तूँ सदा मयूरन कुक्कुट से घिरले ही रहेलू शक्ति वार।।
बइठल कौमारी रूप देवि नारायणि तोह के नमस्कार।।
हाथन में सोभित,संख , गदा अरू चक्र धनुष आयुध अपार।
तूँ ही प्रसन्न वैष्णवी रूप, नारायणि तोह के नमस्कार।।
कर में ले ले तू महाचक्र दाँतन पर लेले धरनिभार।
वाराह रूपिणी कल्याणी, नारायणि देवी नमस्कार।।
नरसिंह रूपिणी दैत्यन के बाँधे में उद्यत सभप्रकार।।
त्रैलोक त्राण संलग्न सदा हे नारायणि वा नमस्कार।
मस्तक किरीट पर महावज्र उज्वल नयना कर वृत संहार।।
हे इन्द्र शक्ति रूपा देवी नारायणि तोहरा नमस्कार।
तूँ शिवदूती वन महादैत्य सेना के नित करलू संहार।
हे महाघोर राखे नारायणि तोहरा के हमर ई नमस्कार।।
विकराल दाढ़ वदने देवी, उर मुंडमाल सोभित सिंगार।।
चामुंड मुंड मथेवाली, नारायणि तोहरा नमस्कार।।

- नकिति (क्रम से)

लिरिक १

भोजपुरी रिग वेद से

देव कुमार मिश्र 'अलमस्त'

वन धुआँ रस गगन ढारे
यज्ञ जीवन हऽ जगत के
यज्ञ जीवन हऽ भगत के
यज्ञ जीवन सधन धन के
यज्ञ तीनों लोक तारे
वन धुआं रस गगन ढारे
जग-धुआं जग के जवानी
भाव वर्मी के रहल पानी
करत चारो ओर हरिअर
वाहु वल के जे सहारे
वन धुआं रस गगन ढारे
जे पिला के रस मलाई
करत जे सभ के भलाई
डील -ढावर, ऊँच खाला
जाय सब के पास तारे
वन धुआं रस गगन ढारे

लिरिक २

सीत रानी- सीत रानी
सोम रस के मधुर पानी

www.bhojpurisahityangan.com

हो जगत के जिवन दानी
बेद चर्चित कवन रानी
सीत रानी-सीत रानी
सहज सुन्दर कवन रानी
लाल, हरिअर, उजर, नीला
के बनावल रंग पीला
शस्य के परि फांक में बनि
जात मोती कवन रानी
सीत रानी- सीत रानी
सहज सुन्दर कवन रानी
होय जड़ भा होय चेतन
के करत सभ के हरित मन
अनल जड़ होला सुगंधित
जब पिअत रस-सोम पानी
सीत रानी-सीत रानी
सहज सुन्दर कवन रानी

हेतमपुर, भोजपुर, बिहार।

मुक्तक

पोर-

छत्रबलि 'अलबेला'

बरखा से तेज बौछार बाटे लोर के
सांस से चलल हवा, जाला झँकोर के
सावन के बरखा में मत भेंव अपना के
टूटे त टूटे द अंग अंग पोर के

गीत

श्री भगवान पंडित

सुन्दर गीत के सुन्दर मुखड़ा, सुन्दर ओकर सुर होला
दुनिया ओकर आदर देला जवन की दस्तुर होला
चल निकले ला लेके गति आपन असली राग के
सबका मीठ बुझाला हरदम अस सवाद भरपुर होला।

केकयी-

विद्यार्थी

का चोला रंगलू ए केकयी जा चुचुकारऽ आपन लाल
अपने हाँथे मूड़ी कटलू कोइला दरलू अपने भाल
चहलू जवन तवन ना लहल, हाँथे पछतावा लागल
ना मिलल चानी काटे के, अबरू तूँ भइलू बदहाल

भय

विक्रमा माली

सनसनी फैलल बा भय के, सब जनता डेराइल बा
धुंआ से धरती ना खाली गगन भी घेराइल बा
आगे हाल होई का केकर आग बारूद में देखी कय
अबहीं त असहीं न सभें, बमउअत के पेगाइल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ठेका ठेकी

विरेन्द्र

ना अमर पीठा खइलन ऊ नाहीं तुहूँ खइलऽ
ठेका ठेकी से पहीलहीं काहे तू अकुतइलऽ
देत बा त देत रहे सुनऽ सबकर टिटकारी
देख ल ना कि एक जाना कवन राहता धइलन

पड़ोसी

विश्वनाथ

जवन मिलल तवन धरऽ अउरी खातिर मरऽ मत
अफरेला बस भरल गगरी, खलिहा हाथ अफरऽ मत
पाक पड़ोसी पाक रहेला, दामन औरी ओकर पाक
हरसठे मत सहकल करऽ, हरघरी लहरऽ मत।

छत्रवलि 'अलबेला'

आपन त अपने ह गैरन के भी गले लगावल जाला
प्रीत -प्रीत ह वैरी के भी जाके गला लगावल जाला
बदलल जाला दिल दिमाग पराया के असहीं
हांथ हांथ ह पैरे के भी जाके गले लगावल जाला।

अध्यातम

डॉ. विश्वंभरनाथ पांडेय

प्रान रूप सभ में बसस, चिदानन्द श्री राम।
सभ में ऊ, उनमें सभे, जानीं, करीं, प्रनाम।।
इन्द्री जीतऽ बुदिध से, हो जा विसय विरक्त।
हरि के अन्दर देखिलऽ, सगुन अगुन भा व्यक्त।।
कृष्ण भक्त के छोड़िके, सकल जगत के लोग।
नासत बाड़े जीव के, फँस विषया रस भोग।।
जेकर आभा जगमगे, जे सभ कर बा आत्म।
सुरूज चान नभ, भू रचल, ऊहे ह परमात्म।।
सभ के सोझा काल बा, होई सभ के अन्त।
सुत-धन- दारा दंभ के भूल, भजऽ भगवंत।।
अतमा अक्षय अमर हऽ ना ऊ जरे कटाय।
नित्य रूप ऊ अचल बा, मारे नाहिं मराय।।
धन के होले तीन गति, दान भोग आ नासा।
भोग दान में ना गइल, त धन के दसा विनास।।

लोहरदग्गा (झारखंड)

साहित्य वाचस्पति स्व० डा. कमला प्र. मिश्र 'विप्र'

www.bhojpurisahityangan.com

निमुकि के मातु गरभ संसार से,
जगत में हम जनमतुआ कहवलीं।
प्यार मिलल परिवार के मोहक
माया का मोह में परि अझुरइलीं।
गोद से धरती धइ के बकइंया।
खेलवा हो तीना-नाच देखवलीं।
बालक बनि के लरिकन संग में,
हुलसत उमकि के धूम मचवलीं।।

भेख प रेख उठल अंगड़ाइ के
अपना मतिन नाहिं केहु के लगवलीं।
जुलुमी जवानी जोम से झूमलि,
झुमि झुमि अपने के खूब सरहलीं।
ओलटलि जवानी, विहसे बुढ़ापा,
लगलीं सहेजे, का हम पवलीं ?
सोन के सोना, हथवा में कुछ ना,
सेतिहे भुलाइ के धसन टेंठवली।।

लागल चटकन चट से चटाक दे,
सब कुछ छोड़ि उंहा बाटे जाना।
तन के खोढ़ा मनवां के ईंजन,
सांस का शक्ति से थाइ चलाना।
चतुर चलाक 'उहां' के पुलिसवा,
चलि नाहि पइहें कवनो बहाना।।
बड़ कड़इल बाड़े टिकट कलक्टर,
उनहीं के बाटे टिकट देखाना।।३

सिगनल लाल, हरा तो गइले,
कइल धइल बटे साथ ले जाना।
साथे पहरुआ 'गार्ड' के पहरा,
पहुँचे के बाटे साथहीं टेकाना।
बांचल अबहीं जे समय-रुपयवा,
तवना से बाटे लाभ उठाना।
हरि के भजन कृपा सेवा बेसाहीं।
नाहीं त विप्र, परी पछताना।।४
सिविल लाइन, -बक्सर

गजल

बैजनाथ 'बटोही'

अजबे हमार गाँव के दस्तूर हो गइल,
जेकरे गले लगवलीं, से दूर हो गइल।।
बिरवा लगलीं बाग में, जनलीं कि आम ह,

www.bhojpurisahityangan.com

फरते फुलात देखनी, बबूर हो गइल
मलहम लगवलीं घाव में तबहूँ ना ऊ भरल
बढ़ते गइल, बढ़ते गइल, नासुर हो गइल
सपना हजार सँईचल, केंकरा से का कहीं
अँखिया खुलल तऽ देख नीं, सब चूर हो गइल।
अइसन बढ़ल दरद, सहलो न जात बा,
बीचे करेज देखऽऊ भूर हो गइल।
हम दर्द हम तऽ बुझलीं, बेदर्द पड़ोसी के
जेकरे के हीत जनलीं, उ क्रूर होइल।
कइसे कहे बटोहीं अपना हिया के पीर
चन्दन समझ के घिसलीं, ऊ धूर हो गइल

तिलौथू, रोहतास।

करऽ उपकार

विक्रमा मांझी

करऽ उपकार जब दुनिया में अइलऽ त
अनमल ताकता त छोड़ द कसाई के
लागल रहऽ नित दिन हरि गान में
जइसे तिअगलस विभीषन बड़ भाई के।

फूटल कउड़ी एको कामें ना आइल
सोना के लंका त नामें ना आइल।
जइसन कइलन ओइसन फल उहो पवलन
जाए के बेरा में मुँह उहो बवलन।

जे जवन बोवल तवने उ काटी
हो जाई तनवो ई एक दिना माटी
माटी के काया ह माया में भूलल बा।
जाये के घरी में भेद सब खुलल बा।

कवनो हथवसल धन हांथे ना जाला
मोका गंवा के बस अदिमी पछताला।
रावन भइल होखे छछात जब भाई
ओकरा के का केहू नीक समुझाई।
असर ना परेला रावन अस भाई के
जीव के डँहकले छोड़ द कसाई के।
चोला छछनी त होश होखे लागी।
आके सलामी जमराज जब दागी।

मुख्य पर्यवेक्षक टेलीफोन विभाग - गिरिडीह।

www.bhojpurisahityangan.com

- पेट

विद्याशंकर विद्यार्थी

पेट त पेटे ह, तबे नू इहाँ भेंट भइल बा
आ केहू के डोंड़ा दिल त केहू के गरम टेट भइल बा।
गरदन ना हतले बा, हतले बा उ हिया में
माल से बा निहाल, औरीन के न जेठ भइल बा।
छटपटा भा पटपटा उपासे, अँतरी तहाक दुह लिही
तोहरा का बुझात का कि खटके धन सेठ भइल बा।
पत्थल आ पाला से त बांच गइल बा खेती
का धधात बाड़ऽ असो न रहरेठ भइल बा।
पैदा उगइबऽ तू आ दाम लगाई दोसर
धइबऽ तबे न बुझबऽ कि ना भेंट भइल बा।
नाँव धरबऽ खुदे कहबऽ कि बड़ राछस से भेंट ह
डहंकवलस देके के डेट, ओकर बड़ पेट भइल बा।
धुरसल करेजा तह में, काढ़ी करेजा जब
धाह तबे लागी कि के हेंठ भइल बा।
सै गो में पांचे गो फूट गइल बा पच्छ में
पनचानबे गो असहीं दुअर घेंट भइल बा।
मिसिर बनल बा केहू तोहरे महान अदिमी
जेकरो ना भरे पेट आ आखेट भइल बा।

गिरिडीह (झारखंड)

गरीब बाप के बेटी

कमलनयन दूबे 'कमल'

कांहे निरिधन घरवा जनम भइले हो
हमरा बखरा में जरते करम अइले हो
मुवली माई जनमा के हम के दुअरी बना के
जनमतुआ के दूधवा के बिना छछना के
जब बड़ भइलीं अनदो दुलम भइले हो
बिना मइया के बेटी के खिआई के पिआई
माथ बान्हीं नहवाई लूर गुनवां सिखाई
देहियां ढांके लाएक कपड़ो दुलभ भइले हो
कांहे निरिधन घरवा जनम भइले हो
केहू जाने मति माने बाकी उमिर ना मानी
अनचितले में आइ गइले देहिं में जवानी
दुख-धंधवो में मनवां मगन भइले हो
कांहे निरिधन घरवा जनम भइले हो
बाबा कहाँ-कहाँ गइलन खोजे बर लौटि अइलन
सगरे गाँवे-गाँवे जा के जलदी बुझइलन
कतहूँ लाख से तिलक नाहीं कम भइले हो
कांहे निरिधन घरवा जनम भइले हो
जउअन रूप अनुराग पइतीं अबल सुहाग

www.bhojpurisahityangan.com

सब कुछ राखी में इ गरीबिया के आग
'कमल' सोचल सपनवां भसम भइले हो
काहे निरिधन घरवा जनम भइले हो

उपाध्यक्ष, वाङ्मय परिषद्, दिनारा

भोजपुरी भंवरगीत
(लोक राग पर आधारित)

आसिफ रोहतासवी

(पाँच)

अँखिया में नाच जाटे सँवरी सुरतिया
पतिया भेजत नइखन;
कटत नइखे बिरहा के रतिया
पतिया भेजत नइखन।

कइसे बिसारि देलें गोकुला के खोरी
सुधिया छींटल हम केतना बटोरीं;
सालेला करेजा उनकर मीठ-मीठ बतिया
पतिया भेजत नइखन।
चनवा के जइसे निहारेली चकोरी
एकटक रहिया निहारसु राधागोरी;
फेरि लेलें मुँह की भुलइले रहतिया-
पतिया भेजत नइखन।
बदरी से झाँके जब दुधिया चंदनिया
डँसि के उलटि जाली जइसे नगीनिया;
साँपिन भइल बाड़ी पिया बिनु रतिया-
पतिया भेजत नइखन।

कहिये फुटल रहे अंकड़ी से गगरी
अब ले भींजल बाटे नेहिया से चुनरी;
जिया के जवाल भइल उनकर पिरीतिया-
पतिया भेजत नइखन।

जोगवा करेली नाजे कवनी जोगीनिया
छीनि लेली हमनी के अंखिया के नीनिया;
मारि लेली 'आसिफ' सँवरकू के मतिया-
पतिया भेजत नइखन।

- कुदरा, 'कैमूर'

www.bhojpurisahityangan.com

बांस के पुल

- लक्ष्मीकांत 'मुकुल'

थाकल आदमी
जब कवो भारी गटरी लदले
आवेला तनी नियरा
ओके देख के जाने
काहें दो थरथराये लागेला
बांस के पुल
हमरा गाँव के।

मैरा, सैंसड़, रोहतास।

एगो बूढ़ के अंत-दसा

रामप्रवेश पाण्डे,

परत ना इयाद सोचल, छने में भुलाता,
बीतल अब जिए के दिनवां, अइसन बुझाता।
भागल देहिया के बल, गातरो झुराइल,
ना आवे नींदो रतिया, मन धड़बड़ाता।
नइखीं मिलत परभु, पाप न पराइल,
आसरा में जइसे तइसे, नाम गुन गवाता।
देत अइनी बिनु मँगले घट-घट निवासी।
दीहीं भगति नाथ ? छाड़ल ना सहाता।
चानीं भुलाइल माया में, भोगतानी करनी,
करुना सागर रउरे सोझे सभ पराता
बितली उमीरिया में, बाल बुधि पवनीं,
लीला बिहारी देखीं, चित तऽ चिलाता।
रखनीं जवन बिधि, अंतवो निबाहीं।
पूत अस मिलल नेहिया बाड़ा अब बुझाता।

बिफल प्रेम के गीत
(नदी में डूबमरत के अवसर पर)

स्व० रामवचन लाल श्रीवास्तव

झिरझिर नदिया बहेले मोर राजा।
बहे जैसे जिनगी के धार हो।
बहते बहत तुहूँ कहाँ चलि गइलऽ।
हम अइनी नदिया किनार हो।।१।।

कवनी रसइतिया बेइमिया लगवनीं।
पटवनीं लोरवा के धार हो।
भइलि कवन मोसे चुकिया ना अइल ?
आइ भइल भिनुसार हो ।।२।।

www.bhojpurisahityangan.com

बिटिया क जतिया कपुरवा ए बाबा।
राखे न एके सम्हारि हो।
देवता चरन पर चढ़ला ले पहिले।
ले जाला पवन उढ़ारि हो ।।३।।

तनि एक घरवा तूँ रोकऽ ए माई।
अतने अरजिया हमार हो।
देइ अँकवरिया उमिरिया सँवारऽ।
खोलऽ तूँ बजर केवाड़ हो।।

जाने धरतिया न जाने गगनवाँ
जाने न कुल परिवार हो।
जेकरा करनवाँ परनवाँ तेजत बानी।।
जाने न हमरो दुलार हो

दोहे

बरमेश्वर सिंह

जहाँ-जहाँ गइलीं,उहाँ,दिहलीं बाजी मार।
हाय! मिलल हमरा मगर,अपना घर में हार।१।
छोटका चानी पर चढ़ी, मूती तजि के लाज।
भौचक, बहिरा गूँगा बनी, बड़कू छिलस प्याज।२।
खुद के दुख हम का कहीं, इचिको नइखे खैर।
जतना जे अपना रहे, उहे भइल बा गैर।३।
राम कहे मन चुप रहे, तइयो कहवाँ चैन।
कानी वा रानी बनल, कहे उरेबी बैन।४।
आज सुनावे फैशला, दुअरा आइल पंच।
लिहले वा बन्दूक आ, पी-पा के वा टंच।५।
हम-हमार के फेर में, जिनिगी भइल तबाह।
मझिला फँसल चकोह में, सूझत नइखे राह।६।
भइल घवाहिल गोधरा, बाद जरल गुजरात।
दूनों के दूनों कहीं, दुख-निन्दा के बात।७।
सुनिलऽ मस्जिद बाबरी, सुनऽ अयोध्या धाम।
पंडित,मुल्ला सब सुनऽ, जे रहीम ऊ राम।८।
देखीं, अब के आदमी, गोरू बनि के आज।
नाथ बिना,पगहा बिना,घूमत तजि के लाज।९।
एह 'खुला बाजार' के, आई, देखीं, हाल।
जाँघ उघारे सोडसी, बेचि रहल बा माल।१०।
हई उदारीकरण ई, साँचों हई उदार।
भरल बाजारे देखि लीं, नंगे बाड़ी खाड़।११।
ना ई सेवा अब रहल, अब ई बा व्यवसाय।
खूब दुधारु बा भइल, राजनीति के गाय।१२।

धनडीहा, भोजपुर।

www.bhojpurisahityangan.com

दोहा

- पी० चन्द्रविनोद

अनकर सम्पत छीन के कइले बड़ हुड़दंग।
जब आपन तनिका गइल देखीं उनकर रंग।।
धूरा झोंकल आँख में ना तनिकोऽ ह ठीक।
झोंकत जो खुद में पड़ी तब का लागी नीक।।
अइसनको दिन आगइल, जेकर ना मउआर।
बस्तर बाँटत जे रहे ऊहे भइल उघार।।
सुख सलहन्ते जे रहल ऊहो बा बेहाल।
अब घर-घर में मंथरा, बुनली छल के जाल।।
अइसन चलत बयार बा सब कुछ बा उधियात।
जब बरगद ले ना टिकल आपन कवन बिसात।।
मन के बात कहाँ कहीं कहवाँ काटीं रात।
ओ पंछी जस डाल के असरो कहाँ भेंटात।।
जो कबीर का फेर में लेहब हाथ लुकार।
आपन फूँकन का मिली रहीं कहाँ परिवार।।

बी.एच.यू वाराणसी-५

बाएन

मगही-रचना

पुजारी

- योगेन्द्र उपाध्याय

शमां बान्ह लाव अदब के पुजारी।
ई कइसन हे क्रान्ति कि शान्ति लुकायल।
बचाव बहल तेज आन्ही मानवता भुलायल
अमन के पुजारी........
लगल आग सगरे हे हलचल मचल हे।
गरीबन के कुटिया से धुंइआ उटल हे।।
सजाव सजाव चमन के पुजारी........
कमर तोड़ देलनु ई महंगी बेकारी।
एही हे लचारी एही हे बेमारी।।
बनाव बनाव करम के पुजारी........
हे एके मतारी हिन्दी-उर्दू बेटी।
नम्र हमरा खखोर नम्र काट नरेटी।
भगाव भगाव वहम के पुजारी........

www.bhojpurisahityangan.com

समझौता एक्सप्रेस

विद्याशंकर "विद्यार्थी"

दिल्ली स्टेशन प समझौता एक्सप्रेस जइसे ठहरल कि सलावत खाँ अन्दरे से आवाज दिहलन- प्रोफेसर साहेब, ए श्याम बिहारी बाबू, बेटी हसीना.....।' सलावत खाँ के ई आवाज इण्डिया अइला के खुशी के आ एह बात के जनवला के रहे कि हम एही बोगी में बानी। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के कान में आवाज जाते मातर उनुका खुशी के कवनो पारा उआरा ना रहल कि हमार मित्र सलावत भाई इण्डिया आ गइलन। उहाँ के दुगो मुसरचण्ड देंह के खुशी लिहले अपनहूँ धाका खात आ अन्हको के धाका खिआवत आगे बढ़े लगलीं, आ फेन जब हसीना बेगम के अपना साथे अइला के खेआल आइल त अपना बगी हसीना बेगम के ना पाके पिछुआइल पइलीं। औरत जात के एह सकसा-सकसी में आइल उचित ना बूझि के ऊँचा आवाज में कहलीं "हसीना जी, रउआ एकान्त में इतमिनान से ओनिए ठाढ़ रहीं, हम रउआ अब्बा जान के लिअवले ओहिजे आ जाइब।"

"ठीक बा, हम इतमिनान से एहिजे बानी प्रोफेसर साहेब, रउरा जाईं, आईं।" हसीना बेगम के मुँह से एकाएक ई बात आइल, आ एकान्त में ठाढ़ होके ऊ आपन परेसना पोंछत रहली, लेकिन धेयान उनुकर इहे लागल रहे कि प्रोफेसर साहेब के साथे हमार अब्बा जान कब आ जइहें। तनिका सा आसरा के समय केहू से मिले के चाह आउर बेकरारी के इच्छा जागरित क के लालसा बढ़ा देला। एहबेर त हसीना बेगम के अब्बे जान आवत बाड़न, एह से उनुकर अन्दर के इच्छा औरी लालायित बा, ऊ हिर फिर उझुक उझुक के ताकत बाड़ी कि हम अब्बा जान से कब मिल लिहीं। पूरा रेल प्लेटफार्म प सबका सिर प टोपिए टोपी लउकत बा, आ जेकरा से जे मिलत बा त केहू वालेकुम सलाम त केहू सलामालेकुम कह कह के एक दोसरा के छाती से लाग जाताड़न। बाकि प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू अइसन बिचार के लोग भी कम संख्या में नजर नइखे आवत। प्रो० श्याम बिहारी बाबू प्लेटफारम से बोगी में घुसले चाहत रहीं कि सलावत खाँ दू चार लोग के धकिअवले बहरी आ गइलन। नजर परते सलावत खाँ परनाम कइलन, परनाम कहल सुनते प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के हाथ एकाएक स्वाभाविक रूप से ई कहत आगे बढ़ गइल कि आदाब सलावत भाई। परनाम आ आदाब शब्द के बेवहार बड़ आ छोट में कइल जाला, बाकि एहिजा त एह दूनों लोग के भावना मजहब के खाई के पाट दिहलस आ बराबरी के धरातल पहिलहीं ओला सनेह के भाव भूमि प ले आके टिका देलस। एहिजा त समझौता एक्सप्रेस ओरे दुनों केहू के भावना गौरव से निहारत बा। लोग मन हीं मन धन दौलत भेंटला के खुशी अइसन गद गद बा। लाहौर से दिल्ली के बीच में कवनो दूरी ना रह गइल, लाहौर दिल्ली लागत बा त दिल्ली लाहौर बुझात बा। लोग के कंठ से कहा जा ताटे कि

www.bhojpurisahityangan.com

समझौता एक्सप्रेस निहाल क दिहलस।

दुनों कुली सब समान उतार के किनार धर दिहलनसँ। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू सलावत खाँ के चल के अपना बेटी हसीना से मिले खाति इशारा कइलीं, एतना देरी में भींड़ कमा गइल रहे। लोग के अपना ओरे आवत ना देखि के हसीना शेप बाचल भींड़ के फाफर करत आके अपना अब्बा जान से लपटा गइली। आ खुशी से एतना जादे इतरा गइली कि उनुका आँख में परसनता के पानी ना रूकल बलुक परेई से भुर कबर गइल आ लागल कि प्रित के जमुना फफात बाड़ी। जबना जल से सभे आपन दामन से झपिला के औरी अधिक पवित्तर क रहल बा।

सबका के एक जगे जबराइल देखि के प्रोफेसर साहेब के चले के इशारा कइले चाहत रहीं, कि सलावत खाँ के धेयान ट्रेन के बोगी ओरे गइल देख के पुछलीं 'काहे सलावत भाई, औरी केहू साथ में बा का २"

सलावत खाँ मुसकात कहले - 'जी हँ, राउर चाचा जी, मतलब कि हमार अब्बाजान उतरे के रहि गइल बानी।' प्रोफेसर साहेब के एतना बात सुन कहाँ पइलीं कि ट्रेन के बोगी ओरे लपक चललीं। प्रोफेसर साहेब के अकेले जात देख के सलावत खाँ पीछा लाग गइलन आ कुछे दूर आगे जाके तड़िया लिहलन, फेर दुनों केहू एके साथ चले लागल। सिर प ऊजर टोपी आ आँख प मोटका फरेम के चश्मा पेन्हले शौखिनेहा मिजाज के साथ पास में पान बट्टा रखेओला अ दिमी, जेकरा देंह के चाम अब देंह के मांस हाड़ छोड़ दिहले बा, उमिर पचासी छियासी साल के उमिर के आंट दे रहल बा, से अदिमी हांथ में बकुली लिहले आखिर अदिमी के पीछे टनकत अवस्था में उतरे खातिर अपनहीं बढ़ल आवत बाड़न। प्रोफेसर साहेब देख के अवहीं सोचलहीं रहीं कि अलिशेर चाचा के नियरा पहुंच के पएर छुअब आ तब उन्हुकर असिरबाद लिहब। एह उमिर में अब अलिशेर चाचा के ओतना थोड़े सुझत होई। प्रोफेसर साहेब के ई सोचल गलत निकलल, अलिशेर खाँ दुराहुते से चिन्ह लिहलन, आ अपना ओरे लपकल आवत देख के ऊ बुझ गइलन कि प्रोफेसर साहेब दुनियावी रीत बेवहार के परम्परा निभावे खातिर नगिचा आ रहल बाड़न। धनी बिचार के अदिमी अलिशेर खाँ उनुका आपन पएर छुवे से पहीलहीं असिरबाद के बौछार करे लगलन- 'जुग जुग जीअत रहऽ हमार प्रोफेसर बेटा, फूलऽ फरऽ, दूधे पुते भरल रहऽ, अल्लाह तोहरा के आबाद राखस।' एतना असिरबाद पवला के बाद भी प्रोफेसर साहेब नियरा पहुंच के पवलगी कइलीं। लेकिन अबकी पारी अलिशेर खाँ के चित में औरी पुरा बदलाव आ गइल रहे, जबना बदलाव के भावना में आके कहले - 'प्रोफेसर बेटा, बहुत बर्रास तू हमार पएर छुके असिरबाद लिहले बाड़ऽ, लेकिन बेटा, ना तू हिन्दु हवऽ ना हम मुसलमान। बलुक तू एगो उच्च आदर्श के इन्सान हवऽ, तू ओह नेक इन्सान के नाते हमरा अइसन छियासी साल के एगो अनुभवी बुजुर्ग अदिमी के दिल छू के असिरबाद ले ल बेटा। छियासी बरिस के ई उमिर अधेआतमिक जिनिगी के छियासी कोस राह चलला के अनुभव ले लिहले बा, जबन कि एगो अनुपम आ अनमोल रतन बाटे। हृदय स्पर्शी बचन सुनते प्रोफेसर साहेब अपना अलिशेर चाचा

www.bhojpurisahityangan.com

के हिरदय से लाग गइलीं। फेर कुछ देरी के बाद एक हाथ से अलिशेर खाँ के सहारा लिहले बोगी से नीचे उतरनीं, त उनुका पीछे पान बाटा लिहले सलावत खाँ उतरलन। हसीना के नजर परते दादा जान के पएर छुके असिरबाद लिहलीं। फिर देखते देखते सब समान कुली उठइलसन आ सभे पीछे पीछे चल दिहल।

(२)

हसीना बेगम के सौहर प्रोफेसर परवेज खाँ सबकर अइला के खबर सुनते जयपुर महाविद्यालय से आकस्मिक अवकाश लेके दिल्ली आ गइलन। उनुका आ जाए से घर में खुशी हबला के कवनो जबाब ना रह गइल। सब मुलाकातिहा सबेर खाँ त अपना अपना घरे रहेलन बाकि अपना घरहुँ से केहू अलिशेर खाँ के चिन्ह परिचित त केहू सलावत खाँ के जानल पहचानल, त औरी केहू प्रोफेसर परवेज खाँ के फोन के नम्बर लाग गइल ऊ आपन भाग बुझ के फोन के आपन चोंगा बिना कुल्हि बात बतिअवले धरते नइखे, चाहे फोन के बिल कतनो काहे ना चुकावे के परे। जहाँ दिल से दिल मिल जाला तहाँ पइसा के मोह छुट जाला। आ परेम के आगा नफरत के तिल भर भी कुछऊ ना बसाला। फोन सलावत खाँ के धरत होला कि अलिशेर खाँ के बोलाहट आ जाला।

कवनो दिन अइसन नइखे होखत कि सांझ के छव बजला आ मरद मेहरारू के मिले जुले खातिर आवा जाही के तांता नइखे लागत। साते आठ दिन में गैस सिलेण्डर के सांस बन हो जा तटे। नास्ता आवे में बिलम होखते हसीना जान जाली कि गैस सिलेण्डर के सांस फटिआ चलल, आ ऊ नौकर के धीरे से भेजा के नया सिलेण्डर मंगवा लेली। आइल आगन्तुक के बतकही के आगे नास्ता में बिलम के पता ना चल पावेला। काहे कि जहिया बिलम होला ओह दिन ऊ चालाकी से कवनो एगो आइटम बढ़ा देली आ बिलम भइला के आभाष केहू के ना होखे देली। एह तरी ऊ एगो चल्हांक घरनी के परिचय देली आ बड़प्पन के बेवहार से पेश आवेली। जेह से सभे सलूकत से गद गद होके उनुका के सराहत जाला।

हसीना बेगम के पोस्टिंग दिल्ली सचिवालय में बा। सौहर आ बीबी के अलग अलग पोस्टिंग होखे से कवनो जादे अन्तर नइखे। काहे कि तीन-तीन गो लइकन के तइयार क के इसकुल भेजे के कुल्ही जिम्मेवारी उन्हुके निभावे के परेला। आ प्रोफेसर परवेज खाँ जादे से जादे डेढ़ दु महीना प जयपुर से दिल्ली आ जालन। फोन के सुविधा होखे से मियां बीबी में सब बात विचार होत-हवात रहेला। डेढ़ दु महीना के बाद अपना प्रोफेसर साहेब के अइला प हसीना के सनेह उन्हुका प्रति आउर अधिक परगाढ़ हो जाला।

बराबर उमीर के आ नन्हकीं से दोस्ती लागला के चलते जब दुनो रसिक मिजाजिहा प्रोफेसर एक जगहा जुम जालन त सर समाचार होखते होखत एक दोसरा से रसकटउअल शुरू हो जाला। आज दुनों मित्र एक जगे जुम गइल बाड़न। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू उनुका में अवगरे हाथ लगा दिहलीं- 'हमरा त इहे बुझात बा कि भाई तोहार बीबी तोहरा के बहरी के हवा नइखी लागे दिहल चाहत।' प्रोफेसर परवेज खाँ उन्हुका के बिन हंसले कइसे

www.bhojpurisahityangan.com

छोड़स, कहलन- 'झूठ मत बोलऽ ए भाई, तोहार मेहरारू तोहरा के नइखी छोड़त, जदि तू लसिआइल ना रहितऽ त तू फोनो न करितऽ।'

प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू अबकी ओरी अबगारे हांथे धचकवलीं- 'अरे भाई, फोन एह से कइलीं, काहें कि उहो तोहरा दुनों बेकत के दुख बुझत रहीं। जब हम एक बे फोन उठवलीं त ऊ जान गइली कि हम तोहरे घंटी बजाइब, एह से दुनों बेकत के बाधा पहुंचे के खेआल से ऊ हमरा के किरिया धरा देली।'

प्रोफेसर परवेज खाँ अबकी उलुटा डंस डंसलन- 'ठीक कहताड़ऽ, ऊ होइत, बाकी तोहरा आ उन्हुकर अधेआए चटक मटक से खटतुरुस जरूर हो जाइत।'

दुनों लोग के बतकही प बतकही चलत रहल अ हंसी के ठहाका खुलम खुला लागत रहल। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू कहलें- 'भाई, हसत हसत पेट फूल गइल, बाकि मन हलुक हो गइल।' प्रोफेसर परवेज खाँ एक चोट अउर लिहले- 'फूलली पेट पचक जाई, हंसी से केहू के गैस बाई ना कबरेला।'

प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू दही में सही मिला दिहलीं, आ अबकी कैंची से काट ना काट के छुरा चाल से कटलीं- 'हं प्रोफेसर, ई दही आ गुर से तनिको कम नइखे, जे रोज खाला ओकरो के गैस बाई ना कबरे देला आ जे डेढ़ दू महीना प खाला ओकरो के गैस बाई ना होखे देला,बुझलऽ।' अबकी दफे देरी तक बरियार ठहाका लागल- 'हऽ हऽ हऽ हऽ हऽ, हि हि हि, प्रोफेसर परवेज खाँ हंसते हंसत दम ले लेके कहले - 'तें त फिर अबकी गहिंड़ारे कटले रे मरदे, तब त बढ़िया बा, तुही रोज खा आ हमरे के डेढ़ दू महीना प दाढ़ मोंछ डुबा के खाए द। हऽ हऽ हऽ।'

प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू भी उनुका संग हंसते हंसत मजाक के ममिला के अउरी गहराई में गइलीं- 'खा, खूब ,खा, कहउत अपनहूं बेहुंड़ी भेजवा दिहीं।'

प्रोफेसर परवेज खाँ हंसते हंसत कहले - हऽ हऽ हऽ, ना भाई ना, फेर तू के ने छिछिआये जइबऽ, तुहूं आपन खा आ हमहूं आपन खाइब।' हसीना बेगम दुनों मित्र के टंग ढंग से हंसत सुनि के कहली - रसिक साहित्यकार लोग रसे से अघाइल रहेलन, आ ओहू में दुनों प्रोफेसर आ तवनो में मित्र हो के रउआ सभे ना अघाइब जा। चाय नास्ता सब तइयार हो गइल बा। अब्बा जान आ दादा जान दुनों केहू हाथ मुंह धो लिहलन। रउओ दुनों प्रोफेसर परवेज खाँ आपन मित्र प्रो० श्याम बिहारी बाबू के गप मजाके में जानल चहलन- 'तब प्रोफेसर ऊ लोग त हाथ मुंह धो लिहल जान तोहार का बिचार बाटे हमनियों के हाथ मुंह धो लेवे के आ कि अस्हीं मरपोट लेवे के।'

प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू, आपन बात उन्हुके प फेंक दिहलीं- 'तोहार जइसन इच्छा।';

प्रो. परवेज खाँ कहले - 'जब हमरे इच्छा प तोहरा इच्छा बा त गदहा त छुअले नइखी जा, बाकी तब चलऽ हाथ मुंह धोआए लिहल जाय, नाहीं त जब हमरा बीबी के डांट परी त तुहूं बुझ ल बोलल ना रह जइबऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

ओने दुनों लोग हांथ मुंह धोवे गइलन तब तलक एने सलावत खाँ आ अलिशेर खाँ दूनों बाप बेटा दु ओरे कुरसी प बइठ गइलन जा। भुखाइल बैल जइसे घरन प पहुंचेला ओसहीं दुनों प्रोफेसर जुम गइलन सभका सामने नास्ता पानी धरा गइल। हसीना बेगम ई तकित करे अइली कि औरी केहू बाकिओ त नइखे रह गइल, जेकरा भिरी कि कवनो आइटम नइखे पहुँचल ऊ एक नजर में दनाक से तहकिकात क लिहली। आ केहू के ई बात मालुम न होखे दिहली कि ऊ आखिर टेबुल के भिरी काहे आइल बाड़ी। उन्हुका अइला से सभे ई जानल कि ऊ अपना दादा जान के नेह छोह से ई बात कहे आइल बाड़ी कि दादा जान आउर कुछ ले आईं। चाल्हांक औरत के एगो ई बुद्धिमानी के बड़ अनुपम उदाहरन हउए। जेकरा के अंगरेजी में लोग झट से टाइटिस कहेला। लेकिन बुद्धिमान अवरत लोग एह अंगरेजी टाइटिस शबद के चुल्हा चउका के बात के कहो अपना बहरछार के ओरिओ त ठाड़ होके के इजाजत ना देली। काहे कि जे एकरा के अंगरेजी रूप में अपना भिरी असथान दिहले बा, एहसे ऊ चुल्हा चउका के सभ्यता से कुलांच मार के नाक भुभुन फोर दिहले बा। आ पोतनहर तहाक फोर फार के मटिया मेट मिला देले बा। ओकरा किहाँ कि किन्हें फैलल बा। आ पुरा सभ्यता के भेख बदल दिहले बाटे। लागेला घर घर ना रहके, होटल हो गइल बा। रोटिओ लोग खाला त चमच से काट के। पचीस साल के नवहा लोग के मुंह से सुनल जाला कि अंगुरी में झिन झिनी बा, गाटा के बाधा बेचएन कइले बा, चम्मच चाहीं। खा लोग अउरी चमच से, मत तुरऽ हांथ से रोटी, तबे नू नया सदी में गिनती होई आ सब शेखी भुलाई।

जहाँ चार अदिमी रहेलन उहाँ के आचार बिचार के एगो अलग माहौल होला। सलावत खाँ अपना बेटी हसीना से भेंट मुलकात करें साल भर में एक बार पाकिस्तान से भारत आ जरूर जालन। बाकि अलिशेर खाँ हरेक साल ना आ पावस। हर साल ना आवे से ई मतलब नइखे कि उन्हुका एहिजा के लोग से परेम भाव घट गइल बा। आ उन्हुका आपन नातीन दामाद आ नातिन से मोहब्बत नइखे रह गइल। ऊ जीअत बाड़न त मोहब्बते के आपन धरम करम मान के जीअत बाड़न। इहे मूल मन्तर ऊ आपना नाती के दे दिहले बाड़न। जे उन्हुकर स्वरूप चिन्ह लिहले बा, ऊ उन्हुकर मोहब्बत के मन्तर के दीछा ले लिहले बा, दिछित हो गइल बा। तबहीं त श्याम बिहारी बाबू उन्हुका मोहब्बत के रंग में रंगा गइल बानी। आ प्रोफेसर परवेज खाँ उच्च आदर्श के अदिमी जान के आपन नातिन हसीना के निकाह क के उन्हुका हांथ में हांथ थम्हा दिहले बाड़न। सन उनइस सौ सैंतालिस से पहिले के कतना घटना उनुका आंखी के सोझा प्रतिबिम्ब के रूप लिहले छछात नाचत बा। ओहघरी भारत पाकिस्तान दुनों एगो अनाज माफिक चना के रूप रहे। बहुत अगते के कहानी के रूप रहल कि अंगरेज बेअपार करे के मसरफ से आइल आ कुटनीति के चाल चलके शासक बन बइठल। ई सब कमजोरी एहिजा के लोगन के रहे, बाद में जब सभे जुलुम के कोल्हू में पेरावे लागल त सभका क दिन आ रात में हरदम तरई लउके लागल। पहिले जे करान्ती के आग सुनुगावल त उन्हुका गरदन में फांसी के फाना पर गइल। बाकी सभका मिल जुल जाए से परिनाम निमन निकसल. लेकिन

www.bhojpurisahityangan.com

घोर दुख के बात ई भइल कि एगो चना के दुगो फारी हो गइल। अंगरेज के आरी एगो आतमा के चिर के दुगो भेख गढ़ दिहलस, दुनों भेख के - सर्जिकल रूप नामसमझी में आत्म गौरव के विषय बना लिहलस। एगो फारी के खोइआ सहिते नावँ हिन्दुस्तान रहल बाकी दोसर फारी के नावँ पाकिस्तान दिआ गइल। जेह में पेशावर एक्सप्रेस दुनों मुलुक के घिनौना रूप के जतरा कइलस।' एतना कहत अलिशेर खाँ के आंखि में लोर भर आइल। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू से ना रहाइल, उहाँ के कहलीं- ' चाचा, अवहियों त दुनों मुलुक के लोग चएन से रहस।'

प्रोफेसर परवेज खाँ के रोआं गन गना गइल, ऊ कहले- 'श्याम भाई, एगो हमरा तोहरा, सलावत के भा तोहरा चाचा के उच्च आदर्श के बेकती हो जाए से सभे थोड़े ओइसन हो जाई। देखत नइखऽ, अशिक्षा के कारन लोग धरम मे अन्हरा गइल बाड़न, आ कतना शिक्षित गिनाहुँ ओला लोग धरम-करम के गलत अरथ लगा बइठल बाटे। सब त सब अन्हरे वा बाकि कतना साहित्यकार लोग भी लोगन के सही दिशा नइखन देखापावत। रोड के राजनीतिक अलकतरा के पीच लोग अपना पएर में मख लिहले बाड़न; आ चरित के सखांरी वे मजले जइवो त ना करेला। सखंरिहा बरतन में जिमें के नतीजा त तू जानते बाड़ऽ कि जुठ-कंटार धर लेला। घोड़ा के लोह लगाम अइसन लोगो के लगाम लाग जाला। अब त जब साहित्यकारन के लागल जुठ कंटार जाइ तबे त सभे रएन चएन से निरोग हो के रह सकेला। साहित्यकार के कलम से सरग के समान सनसार के सिरिजन होला, अवहीं त ऊ लोग बंम आ बारूद के धुँआ के बरनने में ब्यस्त बाड़न, ऊ लोग के ई थोड़े चिन्ता फिकिर बा कि लोग के बेंबचल पीठांस आ चिहुकल कमर के बाथा कइसे जाई। एहघरी त दुनों मुलुक के लोग बेंबचन आ चिहुकन के बरियार बेमारी से तबाह बा।

हसीना बेगम ठीक समय ना जान के प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के टोकली- 'रउआ आपन खेआल करीं, साढ़े आठ बज गइल आज काल्ह नवे बजे में पुरा सन्नाटा छावे लागत बा।' परिस्थिति के भुक्त भोगी सलावत खाँ आ अलिशेर खाँ दुनों बेटा बाप के मुंह से निकसल - ' हं प्रोफेसर साहेब, ना होखे त रउआ सेकराहे निकल जाई। हमनी के अवही महीना दिन ठहरब जा. भेंट मुलाकात फेर होई।'

सभे नास्ता क लिहले रहे आ अब चाहो खतमे रहे' प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के मुंह से आइल - 'चाचा जान, एह लागल परेम से छनो भर बिलग होखे के मन नइखे करत। चाचा तुहीं न ऊ इन्सान हव कि तू हमरा के बचावे खातिर अपना छोटका बेटा के गदरिहा लोग के हवाले क दिहलऽ आ तू अपना छाति प कुइंक के पथल धर लिहलऽ।' अलिशेर खाँ के ई बात सुन के आंख में आंसू छलछला गइल। लेकिन तबो ऊ आपन आंसू अन्दरे अन्दर पी गइलन। फेर दुलार से श्याम बिहारी बाबू के समुझावन कहले - ' अपन जामल के एगसे आपन बेटा ना कहल जाला, बेटा। जनम के बाप से धरम के बाप बढ़के होलन।'

प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के आत्मा में सहानुभुति के भाव जाग गइल - ' चाचा जान, तोहार इहे बड़ बलिदान हमरा आ तोहरा में खुन पसेना के नाता जोड़ दिहले बा। हमहूं त तोहार बेटे

www.bhojpurisahityangan.com

दाखिल बानी। जब तूं जाए के कहताड़ऽ त हम तोहार बात ना टालब; बाकि पीने नौ बाजए चलल बा, तनि समाचार त सुन लिहीं।'

प्रोफेसर परवेज खाँ से ना रहाइल सबकर सहमल चेहरा देख के ढाढ़स दिहलन- अरे प्रोफेसर भाई, एक रात घरे नाहिए जइबऽ त कवन अकाज हो जाई, फोन बा न, खबर कर द, ठहर जा आज। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू कहलीं - 'से त ठीक बा, तोहरे बाता एतने बीच में समाचार शुरु हो गइल। सब केहू एतना चुप हो गइल जइसे ओह घर मे केहू हइए नइखे आ समाचार शुरू बा। अउर समाचार सुन के सभें चिहुंकल बाकि जब एतना सुनाइल कि अपरिहार्य कारन से छव दिन बाद सरकार समझौता एक्सप्रेस अनिश्चित काल खातिर बन्द करे के निर्णय ले लिहले बा। त सभे अवाक रह गइल। खुशी के माहौल दुख के आकार लेके सबका के ढांप दिहलस। सभे दमी सधले सोचतहीं रहे कि सलावत खाँ कहले -बेटी हसीना, बिहान हमनी के पाकिस्तान वापस लवट जाइब जा त ठीक होई। 'अलिशेर खाँ भी दुखित हिरदय से कहले - 'हं, लौटिए गइल उचित होई, काहे के ई दुनों मुलुक के हिरदय विदारक कहानी बा।'

(३)

अलिशेर खां आपन बेटा सलावत खां संगे रेलवे प्लेट फारम प बइठल बाड़न। हसीना बेगम उन्ही लोग के संगे बाड़ी, ऊ लोग उन्हुका के धिरज धरा रहल बा कि बेटी हमनी के तोहरा के अकेले छोड़ के नइखीं जा जात। तोहरा संगे तोहरा सौहर बाड़न आ प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू हरघरी तोहरा सुख दुख में अटिहें। लेकिन तबहूँ औरत जात के धिरज के बान्ह टूट जाता आ भीतर के टूटन के भाव विह्वलता के रूप धारन क लेता। उनुका दुनों आंख से लोर के चुन टप टप चुवे लागत बा। ऊ कहे लागत बाड़ी- 'दादा जान अइसन परिस्थिति के सजा त सबसे बेगुनाह खातिर अखरत बड़ुए।'

अलिशेर खां उन्हुकर पीठ प गते गते सुहुरावत कहले - ' अब अखरे से का होखे भा बरसाये ओला बाटे, बेटी। धरम करम के असली स्वरूप केहू चिन्हत नइखे आ जिगर के लगावल अङ्गुरा में लोग अबहीं तलक अङ्गुराइल चलल आ रहल बाड़न। सेही बीच में कहीं कहीं कवनो छद्म भेषी राजनीति पार्टी के नाव प भीतर घात के खेले खेले लागत बाटे।'

एतना बतकही के बीच प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू प्रोफेसर परवेज खां के साथे रिजर्वेशन के टिकट लिहले आ गइलीं। हसीना बेगम श्याम बिहारी बाबू के हालत देख के कहली- ' टिकट लेवे में परेशानी त जरूर भइल होई।' प्रोफेसर परवेज खां उन्हुका चुप लगावला के बदला में कहले - ' परेशानी के अन्दाज त श्याम बिहारी भाई के चेंथाइल सर्टे से लगा ल। घड़ी त इन्हिकर भींड़े में खुल के गिर गइल, खोजे के संस ना रहे, हेरा गइल। भला जाए ओला के भींड़ अइसन भींड़ बा, सभे कहत बा कि आज त कमे भींड़ बा, काल्ह त औरी अधिका होई।' अलिशेर खां प्रोफसेर श्याम बिहारी बाबू के पसेने पसेना भइल आ फाटल शर्ट देख दुलार से उन्हुकर मुंह धर के पुछलन - बेटा, कहीं चोट त नइखे लागल।' प्रोफेसर श्याम बिहारी के आंख में लोर भरि आइल, ऊ डभडभ गइलन, कंठ में बोली आके अंटक गइल' काहे कि उन्हुकर देंह जतना भींड़ में कचरा के नइखे बथत आ जतना सर्ट फाट के बेइज्जती अइसन नइखे लागत, ओतना उन्हुकर अन्दर के हिरदय कचरा के बथता आ करेजा बिहर के उन्हुका एगो बड़ परतिष्ठित अस आपन बेइज्जती नियन लागत बा। अलिशेर खां उनुका के कुछऊ ना बोलल

www.bhojpurisahityangan.com

चालल आ डभडभाइल देख के उन्हुका मन के भाव भांप गइलन आ कहलन - ' कहो प्रोफेसर बेटा, अवकी दफे तु अपना हांथे हमनी के सत्कार ना कइलऽ आ पानी न पिअइलऽ सेकर तू. ....।

'चाचा तू...................' एकरा आगे प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के कंठ में बोली फेनु अंटक गइल। अलिशेर खां उन्हुका के अपना हिरदय से लगा लिहलन आ उन्हुकर दुनों आंख धरमात्मा बाप नियन दुलार से पोंछत कहले -बेटा, अवकी दफे त हम तोहार लोर पीके अऽा गइलीं। विदा के समय में आपन पराया त पानीए पिआवेला, बाकि तू त छियासी साल के उमीर में आपन लोर पिआ के विदा करऽताड़ऽ, खुदा के विधान के का पता बेटा, फेर हम लौटब कि ना लौटब, धरऽ ल थरमस आ जाके पानी लिहले आवऽ, तोहरा हांथ के हम पानी पी लिहीं आ हमार सलावत बेटा भी पी लेस।' अलिशेर खां के कहत भइल कि प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबु पानी के साथे पाव रोटी दनाक से ले के आ गइलीं। थरमस थम्हावत कहलीं- ' चाचा छुंछे पानीए मत पीअ धरऽ पाव रोटी भी त ल खा ल. ल सलावत भाई तुहूं धरऽ ल खा, आ हई सब नास्ता आगे सफर में खातिर धर ल। एक ओरे प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के बेवहार से अलिशेर खां सहित सलावत खां के हिया हरन जुड़ाये लागल त दोसर ओरे हसीना बेगम सहित प्रोफेसर परवेज खां के सनेहभरल आंख अउर स्नेह से अघाये लागल। सभे मौन होके एक दोसरा में लगन भाव निहारत रहे, तबले गाड़ी खुले के एलाउन्स होखत सबकर मौनता के साधल समाधि टूट परल। अलिशेर खां आ सलावत खां के अपना बर्थ प बइठा के प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू हसीना बेगम के सौहर प्रो० परवेज खां संगे नीचे उतर अइलीं। बेगम हसीना के बात बात में रोअल देख के अलिशेर खां समुझावत कहलन-' बेटी जवान मुलुक में प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू अइसन आदिमी बाड़न, उहां तोहरा कवनो चीझ के कमी ना महसूस होई। बाकी बेटी, प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के हमार कमी जरूर अखरी।' एतना कहत अलिशेर खां फफक फफक के रोवे लगलन आ आंख के बाद नाक के पानी छिरिकत कहलन - ' बेटी तू आ तोहार सौहर मिलके हमनी बाप बेटा के कमी के भरपाई उन्हुकर जरूर करिहऽ जा।'

प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू खिड़की के लगे धइले सब बात सुनत रहीं, बाकि अपना से अलिशेर चाचा आ सलावत भाई के बिछुड़े के बियोग झेलत रहीं। गार्ड झंडी देखा के भिसिल दिहलस। समझौता एक्सप्रेस छुट गइल। प्रोफेसर श्याम बिहारी बाबू के मन के स्थिति बूझ के प्रो० परवेज खाँ भर अँकवारी धर लिहलन आ बेगम हसीना अपना रुमाल से उन्हुकर आंख के आंसू पोंछे लगलीं। उन्हुका मुंह से एकाएक आइल - समझौता एक्सप्रेस आंखि से ओझल हो न गइल।'

✪

गिरिडिह (झारखंड)

रेखाचित्र

पहरपुर : एगो गाँव
(का भूलीं का याद करीं)

अवध बिहारी ओझा

पहरपुर- ई एगो गाँव ह भा एह नाँव के एगो गाँव। इहे हमार जनमभुंइ ह। संभव बा कि एह नाँव के अवरू गाँव होखे। बाकी हम जवना पहरपुर के चर्चा करत बानी उ साँचो के पहरपुर ह - खाली पहरपुरे एकरा अलावा कवनो दोसर पहरपुर के पर्यायवाची ना ह। ई दोसर बात भइल

www.bhojpurisahityangan.com

कि कुछु अक्लमन्द (अक्लः मन्दः यस्य सः अक्लमन्दः इति बहुव्रीहि समासः) लोग अपना समुझे चाहे दोसरा के समुझावे खातिर विशेषण लगा देत होखे जइसे गउरा पहरपुर-करजा पहरपुर। बाकी हमरा एकर जरूरत ना परल। जवन नाँव जवारी लोग के जबान पर रोज आवत होखे ओकरा आलम्बन के जरूरत परिये ना सके। पहरपुर पढ़े जात बानीं - पहरपुर सौदा बेसाहे जात बानीं- गहना गढ़वावे जात बानीं- जिउतिया गँथवावे जात बानीं - साँप के काटल झरवावे जात बानीं। दिनरात पहरपुर शब्द के रटना लागल रहेला। ई अपना में गाँव हो सकेला बाकी जवार के लोग एकरा के लहुरा शहर मानेला।
गंगा के किनार प सीना तान के ताल ठोकत एह गाँव के बारे में एगो बात हमरा ना बुझाइल कि पहरपुर केकर नाँव ह- ओहिजा के माटी के कि ओहिजा के बगइचा के कि ओहिजा के नदी कि कि ओहिजा रहे वाला लोगन के। यदि ई भौगोलिक-अभिज्ञान जरूरी रहित त परदेश में बसल एकर बेटा-बेटी पहरपुर के मूर्त्त रूप के सपना काहे ना देखित, कल्पना काहे ना करित? काहे सपनो में ओहिजा के महुआ के सुगंध आ आम के मोजर के बोर ओकरा नथुना में भरि जाला- आतमा के तिरपित कर देला! काहे ओकरा सिनेमा-टीभी इयाद ना परि के करइल में जामल टीभी आ ढोढ़न ओझा के रामायन के आलाप आ विधवा मंगर बो के प्रलाप इयाद परत रहेला आ उ चाहि के भी ना बिसुर पावे। काहे पहरपुरिया लोग के दोसरा जगह के भूत-प्रेत के डर ना लागे बाकी पहरपुर के भकना के बूढ़ा- पिपरवा पर के बरम्ह बाबा गउरा के जिन्न के याद परला से देह में कँपकपी ले लेला आ देवराम बाबा के गोहरावे लागेला। एकर जवाब हमरा ना मिलल! संभव बा एकर जवाब रावा पास होखे बाकी रवा ऊ अपने पेट में संगोरि के राखीं- हमरा जरूरत नइखे! हम त पहरपुरे के कल्पना में जीयल-मुअल चाहब- ऊ हमरा गाँव के कल्पना ह- हमरा जनमभूई के कल्पना ह- निछछ आपन कहाये वाला कल्पना ह। ओह सपना के पेरला से जदि अमरित मिलल त जी जाँइले आ जहर चूअल त घेंटी में जामा क के नीलकंण्ठ बन जाँइले । ओकर माहुर भी हमरा खातिर अमरिते ह।

पहरपुर के बेटा यूनिफार्म पेन्हिके अंगरेजी-इसकूल ना जाय-पाँएट आ गंजी पेन्हले नाक छिरकत महेशलाल के पाठशाला में जाला। ओहिजा से सिधारी राय के मध्य-विद्यालय में चहुँप जाला आ तवहीं दादी के सोहिला पूरा करे खातिर बियाह हो जाला आ साल दू साल में बाप ना बनल त गंगा मइया के पीठा भखाए लागेला। पाम्ही जामते बाबू के संगे खेते जाए लागेला बाकी खेत में खाली ओकर हाथे काम करेला- मन त घर में बइठल कनिया के झुलनी के सपना देखत रहेला आ ओह सपना के मृच्छंना में कहीं झुलनी के धाका लागल त कलकत्ता पहुँच जाला। बाकी सपना ओहिजो ना टूटे। टूटेला तब जब पुरुब देश के पातर पानी चटकल के पटुआ के ताना बाना में अझुराइल ओह गवरू जवान के मलेरिया के रोगी बना देला- तब नोकरी चाकरी के गेंठा देखा के धावल आवेला आ ग्राममाता के आँचर में लुका जाला- मलेरिया गाँव के सीवाने पर रहि जाला काहे कि मलेरिया के भी जाँघ काँपे लागेला पहरपुर के गड्वट हवापानी से -

www.bhojpurisahityangan.com

डाक्टर विश्वनाथ के मिठकी दवाई से आ वैद जी के चिरइता के काढ़ा से। रावा विसवास ना होखे त रावा कवनो रोगी के पहरपुर भेज दी। उन्हुकर क्रौनिक बेमारी के पहरपुर के माटी में लोटिया के खतम होत देख लीं।

डा० विश्वनाथ ई मात्र व्यक्ति ना हवे- अपना में एगो संस्था हवे। खद्दर के बकुलावल धोती-कुर्ता पर जवाहर कोट आ धप-धप उज्जर गाँधी टोपी से प्रतियोगिता करत उच्च लिलार के चमक। औसत कद-काठी बाकी हजारों के भीड़ में भी चिन्हा जायेवाला। डा० विश्वनाथ के हाथ में एकबाल अइसन बा कि जहाँ उन्हुँका सायकिल के घंटी के टुनटुनाहट रोगी के दूर से सुनाइल कि रोग भागल- जइसे ओझा के मन्तर से भूत भागेला। स्वतंत्रता सेनानी- सन् बयालीस के सजायफ्ता आ पक्का आर्यसमाजी- व्यवहार से गाँधीवादी। होत परात गंगा स्नान आ आर्यसमाजी पद्धति से हवन-यज्ञ। फीट-फाट होके दवाखाना में हाजिर। रोगी के पूरा जाँच-सवाल प सवाल- का तकलीफ बा- पैखाना कइसन होता-कड़ा होता-पातर होता -करिया होता कि पीयर होता- पेट ममोरता कि खून आवत बा आदि आदि? कन्सलटेशन फीस कौड़ियो ना टनक आवाज में कम्पाउन्डर ब्रह्मचारी ब्रह्मदेव के आदेश दीहें- 'बसगित कानू-चार नम्बर-छव खोराक सुसुम पानी के साथ। लहसुन पियाज-खाँटा-मिठा बन्द। मँड़गिला भात गाइ के दही चाहे माठा जो।' 'चार आना पैसा द' 'नइखे' 'काल्हु बाबू से मंगले अइह आ आके बतइह कि कइसन बा।' हो गइल। एगारह बजे ले एही तरह से रोगी देखात रहीं। दवाई लेत रही लोग- जे दे ओकरो भला- ना दे ओकरो भला। ओकरा बाद खाना खाके सायकिल नधाइल - आराम हराम। चार-पाँच कोस तक गाँव-गाँव सायकिल जोतले डाक्टर विश्वनाथ रोगी देखिहें- दवाई दीहें आ किरिन डुबला घरे लवटिहें- घरे पर स्नान-ध्यान आ ललटेन के अँजोरा आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित ग्रन्थन के अध्ययन। लोग शिवाला-ठकुरबारी में कीर्तन के बहाने लोगन से निदांरस के अमृत लेला आ डा० विश्वनाथ दुआरे पर बइठल ज्ञानामृत के रस ले ले। ओही बीच केहू पहुँच गइल- असतुरनी के माई के लाट बथता- सिधारी गोसाई के बीछी मरले बिया कतना झराइल- पटकत-पटकत चमरौध जूता टूटि गइले स बाकी बीछी उतरे के नाँवे नइखे लेत। अनवरत दवा - वितरण। लेकिन डा० विश्वनाथ ओह दिन आँखि-दे कइके पटुआ गइले जब ऊहुँकर भवाहि ढोढ़न बो बेटी के आइल आँखि में नसादर के आँजन लगा देलीं आ राति भर बाप-बाप चिचिया के ऊ लइकी आन्हर हो गइल। धरे बैद त मरे काहे-झूठ हो गइल।

जइसे गीरहत अपना रासि में से अकउछ निकालेला ओसही डा० विश्वनाथ अपना कमाई में से धर्मांश निकाले ले आ सालभर प आर्यसमाज के बड़का समारोह करावे ले। हरियाणा, दिल्ली, आगरा दूर-दूर से प्रचारक आ विद्वान लोग आई- लाउडस्पीकर के भोंपा गरजी- जातिप्रथा-मूर्तिपूजा खतम होखो- विधवा -विवाह शुरू होखो इत्यादि।

सुनीले कि तीरडंडी बाबा कहेले कि पहरपुर के बभना बुद्धि गइले स- बाभन के गाँव में अरिया-समाज के प्रवचन-राम-राम अब दुनिया रसातल के जाई। पाँडे जी के कान में बात

www.bhojpurisahityangan.com

परल आ तुरन्ते वैष्णव धर्म के सभा आयोजित कइल गईल- श्री माध्वाचार्यजी के प्रवचन के चर्चा आजुओ जिन्दा बा। रधुनी काका (जे साल में मुस्किल से दु-चार दिन नेहात रहन) बिना नेहइले मुँह में अन्न डालल छोड़ि दिहले। सामी जी कहले बाड़े कि बिना स्नान के अन्न ग्रहण विष्टा के समान होला। जब नेहाइल जरूरिये बा त काहे ना ठकुरबारी में जल चढ़ाइ देल जाव।

ठकुरबारी के इयाद परला पर लछिमी बाबा इयाद परि गइले। लछिमी बाबा के जीवनादर्श के ज्ञान हमरा नइखे आ एकरा पर तारिश्वनाथ ओझा विस्तृत शोध करि रहल बाड़े एह से हम आगे बढ़त बानीं। १६५० के आसपास लछिमी बाबा ठकुरबारी बनवले- ठाकुरजी के कक्ष - सामने छोट बरण्डा ऊपर शिखर- उखर कुछु ना।

बगल में उहुँकर परम्परागत घर- उन्हुकर बास स्थान। बाकी एह ठकुरबारी के अइसन हाला भईल कि गाँव भर के नवछेटिहा लगले दीक्षा लेवे। मरगदा के महातमाजी आवसु- हवनकुण्ड में तामा के लछिमी - नारायन के गरम कइल जाये आ दीक्षार्थी के पाँकुर छापि (दाग?) देल जाय। लाइन लागि गईल दीक्षा लेवे के। केकर-केकर लीहीं नाँव। बाकी सभले चाँढ़ निकलले पारु ओझा- नाँव बदलि के 'साधु' कहाए लगले। फुसफुसाहट होखे लागल कि 'लछिमी के बाद सधुइये महन्थी लीही, ४० बीगहा खेत बा ठाकुरबारी में।' आसंका गलत निकलल-छंइटी भर बेटा-बेटी के बादो पारू ओझा साधु कहाते रहि गइले आ लछिमी बाबा के बाद महंथी खतम भ गइल- उदार सीताराम जी खेत के लालच छोड़ि देले आ छटे-छमाहे भोग लागि जाला तबो खुश रहेले। ओइसे भोग लागे में कबो-कबो कोताही आ भा परसादी के न्यूनता लछिमी बाबा के जीवनकाल में भी होत रहे काहे कि ई गाना अभी ले प्रचलित बा कि -

'मठिया में कटत बा उदासी, परसादी बिना-
रूसल बाड़े कुंवर के बेलासी। परसादी बिना.....।'

आ ठकुरबारी के-देवता-देवकुर के शान में बड़का आँच तब लागल जब बलिरमवा एके राति में पोखरा पर के महाबीर जी के चानी के आँखि निकालि लेलस, ठाकुर जी के छत्र चोरा लेलस आ ओही पईसा से बेहवेहवा के नाच करवलसि-सँउसे गाँव बड़ा आनंद से देखल राति भर आ बलिरमवा के बखान करत ना अघाइल। बलिरमवा कहेला - अरू बाजा ना बाजी, बाजी त हुडुक- भाई गोतिया ना खईहें- खाई त तुरूका। असहूँ बलिरमवा त गाँव भर के भवद्धि से निकालल बा आ खुदे तुरुक बनि गइल बा- इ कहिके गाँवभर बरदास्त क गइल, बाकी महंगू काका के करेजा में ई घटना बनबइर के काँट अस गड़ि गइल - एक ओर से निकालसु त दोसर ओर से अझुरा जाय।

महंगू काका आने एम० ओझा छूट बनि गइले। उहुँका के एम० काका कहला पर बड़ा खुश होले। दिनचर्या बड़ा-सीमित। होत पराते चाय के कप लेले काकी से कहिहें कि फौज में इसको बेड टी बोलता है आ काकी तुरंते उघटि दीहें - आरे, अगिला जनम सुधारीं- बिना नहइले

www.bhojpurisahityangan.com

मुँह में खरुह भी ना डाले के - नरक होई । 'हा.हा, हाहा, गलचूमना के माई, कवनो बाघ को दतुवन करत देखा है ?' चाय पी के डोलडाल आ फेनु बतकूचन। स्नानार्थ नदी-प्रस्थान आ बीच में चनरिका बाबा के दुआर पर बतरस। लौटि के भोजन आ ओकरा बाद तास के चंडाल चउकड़ी। 'का हो पाँड़े बाबा , महटरवा आजु ना आएगा का-महेहरारू बरिज दीया होगा- बड़का मउगमेहर है। जूटना त नीमन खेलता है बाकी बींड़ी पीने से उसका मुँह महकता है - भकभक्।' तास खतम त मौसम के अनुसार होरहा, चौउरी के महाभोग बाकी एक मटर भर शिवजी के बूटी खइला के बाद फेनु बाजार पर चाय के चुस्की आ लौटि के गांजा -सम्मेलन बार्की बाबू के डरे गिदिकन तेली के दुआर पर। गिदिकन उर्फ माड़वारी के नारा प्रसिद्ध वा- जे ना पीए गांजा के कली। ओह लइका से लइकी भली। नतीजा नीमन-नीमन घर उजरि गइल। पहिले मिठाई खिया के दम लगावे के आदति डलिहें आ पूरा गंजेड़ी बनि गइला पर त उ लईका खुदे धर से चोरा के पइसा ले आई गांजा पीए खातिर।

एम० काका घर के काम काहे ना करसु- एकरा पीछा एगो खीसा बा। एकदिन रकटूबाबा (एम० काका के पिताश्री) खोंई -खोंई करत राख प बलगम उगलत कहले - 'मंहगू बेरि ढरि गइल- गलचूमना खइले नइखे- तनी छोटी तरी में चलि जा जनेरा कटाता।' एम० काका के हकबक बन्द। 'आहि दादा अब फउज से लवटि के खेतों में जांगर ठेठाना पड़ेगा का ?' मनेमने सोचले। तुरत एगो नाटक कइले। चारो ओरि देखि लेले कि केहू बा ना नू आ रकटू बाबा से कहले 'बाबूजी आजु शिवजी का बाड़ा छोह था कि केहू ई बात सुना नहीं ना त ई बात फौज का आफीस को केहू लिख देगा त हमार पिनसिन बन्द हो जाता कि एम० ओझा काम के लायक है- काम करता है। आजु से कवनो काम मत आरहइयेगा।' तहीये से घरबधार के काम से संन्यास-पूर्ण - संन्यास।

एकर ई माने नइखे कि एम० काका निकम्मा हवे। साँच पूछीं त गाँव भर में ओतना व्यस्त आदमी केहू नइखे। सँउसे गाँव के एकमात्र खैरखाह। केहू पर कवनो बिपत परे- तकलीफ आवो -एम० काका तन मन धन से हाजिर- चाहे जेठ के दुपहरिया होखे- भादो के अन्हरिया आ भा माघ के अधरतिया। गाँव के हर सार्वजनिक प्रसंग के अगहरिया- एम० काका। सोहराई में चावों शुरू होई कान में अंगुरी डलले चनरखली अहीर के टाँसी से-

'जतना सरगवा में जोन्ही रे जोनही, ओतना बाबा के बाड़ी गाय।
पुरुब से गाय पछिम चलली सरग धूमिल हो जाय।'

जबले चरवली बाजल बोड़ कहतारे तले एम० काका एगो रसदार बीरहा कढ़ा देले-

'छिटिया पहिर गोरी बिटिया कहली कि चुनरी पहिर लरकोर।
पीयरी पहिर गोरी चलली ससुरवा कि मनके बा अँखिया में लोर।'

माघ पंचमी के ताल ठोकाई शास्त्रीय फगुआ से- पटाक्षेप होई एम० काका के जोगीरा से भउठियार के चनरिका ओझा कहिहें कि- ' मंहगुआ लइका के लइके रहि गइल। छोड़, आधराति

www.bhojpurisahityangan.com

हो गइल- चइता शुरु कर आ' विना पुछले कट्टा दीहें
पाँच ऐ पच्चीस इहे पुरुधान, रामा हो, एही बीचे,
लागला ए बाजार , रमा हो , एही बीचे।'
लोग सासे लेता कि एम० काका के टाँसी फूटी -
गोरी -गोरी बंहिया मे हरी हरी चूरिया ए रामा लीलरा पर।
सोभेला इंगुरा के चुन्नवा ए रामा लीलरा पर।।

अनदिना के गवनई में भी एम० काका अलग से चीन्हा जाते। ढोलक आ डुग्गी एक साथ सम्हारत गंगासागर पांड़े - क्लेरिनेट लेले जलील मियाँ- हरमुनिया पर राम जी लाल आ पचास जोड़ी झाल मजीरा के अगहरिया एम० काका के गोड़उ तर्ज में 'गाइये गनपति जगवन्दन'।

एम० काका के महफिल टूटे के कबनो बेरा ना रहे। सँउसे दल के माटी के चूँकड़ में चाह मिलत रहो आ आचारीजी के दोकान से पान के बीड़ा अनवरत आवत रहो। बीच- बीच में उहुँकर टोकटाक भी होत रहीं बाकी दोसर केहू बोलल त हुंड़ार अइसन हुरपेट दीहें।

गाँव के पाटीवन्दी से एम० काका प्रभावित ना होखस। सभके से उन्हुँकर बोलचाल आ उठल-बइठल। केहुए के गाइ बिआई ओरा फेनुस पर अधिकार एम० काका के। केहुओ के लउका फरो पहिलका फर एम० काका के। सभके फेंड़ आ खेत से कुहुओं एम० काका ले लीहें आ लोग हँसि के रहि जाई। एम० काका के पँवारा लिखले ना लिखाई। दोसर बात ई कि लिखला के लाभ का बा। अइसन कवन गाँव बा जहाँ एगो एम काका ना होइहें। हम त अंपना मनसाचन खाती दू-चार बात टाँकि देनी हा। ई कबनो गल्प साहित्य थोरे ह। जदि केहू के आच्छा लागल त फेनु मनसाचन होई। तब ले राउर जान छोड़ देत बानी।

✪

कमल नयन दूबे 'कमल' समीक्षक - रामायण सिंह

'गजरों का गजरा'

'गजलों का गजरा' पढ़ के मन हरिया गइल। बड़ा नीक लागल। कवि के कलम के कमाल देख के हम पयमाल ही गइलीं। साँच पूछल जाय त गजल उर्दू के खासियत ह लेकिन भोजपुरियो में आपन डुगडुगी पिटलस। एह मशहूर विधा में आज खालो सिंगारे प्यार के ना बलुक जुग के सुनगत सवालनो के आवाज साफ सुनाई पड़ रहत बा।

'गजलों के गजरा में किसिम किसिम के फूल गुंथाइल बा। एहमें सुवासो बा आ जिनिगी के भंड़ासो बा। रचनाकार अपना जुगधर्म के भुलाइल नइखन। एह पेंचदार जिनिगी के हेर पेंच एह रचना में उजागर भइल बा। पारम्परिक प्रेम प्यार के अलावे कवि समाज में फइलल घोर विषमता,भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, राजनीतिक दोगलपन वैगरह बुराइयन के घांटे के पुरहर प्रयास कइले बा।

शराफत का नाटक किया कीजिए।
जननायक कहाकर जिया कीजिए।

में नेतन के दोगलपन के कमाल के चित्र उरेहल गइल बा। अतने नाहीं एह राजनीतिक जीव से उबिआइल कवि बरबस कह उठत बा-

www.bhojpurisahityangan.com

जनाने के लायक बताने के लायक
नहीं है गजल अब सुनाने के लायक।
यहाँ लोग गिर गिट सा रंग है बदलते
नहीं साफ सुथरे कहाने के लायक।

आजु आम आदमी के हालत बा, ई केहू के बतावे के जरूरत नइखे। भय आतंक के माहौल में आदमी जीयत लास जइसन डोलत बा। तनी देखीं-

फन उठा आतंक है फुफकारता हर मोड़ पर
जीता मरता ऊँघता सा जी रहा है आदमी।

कवि गरीबी के जवन करेजकटु चित्र उकेरले बा, ओह में कल्याणकारी राज के सब दावा उघार हो जात बा

ठिठुरते हैं जाड़े में कपड़े लपेटे
सहन होता उनसे नहीं है ये पाला।

'चाँद से निकल रही है आग की ज्वाला आ 'दम घुटा जा रहा है जी रहा है आदमी' जइसन गजलन में कवि के पीरा आ छटपटाहट के अन्दाज लगावल जा सकेला।

'गजलों का गजरा' एगो पोढ़ रचना बा। गजल के टोन, जइसन सोझलार बा, ओइसने कटगर चटगर आ चोटगरो बा। शब्दो बड़ा सटीक बाड़े सँ। एह पुस्तक के आवरण आकर्षक बा आ छपाई सुन्दर बा।

चाँदमारी रोड, आरा।

के सुनत बाटे

डॉ० सत्यनारायण उपाध्याय

के से कहीं सुनत के बाटेऽ।
देखि देखि मन गुनत बाटेऽ।।

नाया जुग के नया देन बा,
पढ़गित के कुछ अजब ढेन बा।
पूत जनमलन उनकर देखीं,
का-का खिलकत होखत बाटेऽ। के से कहीं.....

टुटहीं खाट माय लोटिआइल,
बूढ़ बाप भुइयाँ पटुआइल।
रंग महल में ओने देखीं,
जम के चकलस काटत बाटेऽ। के से कहीं.....

करवट बदलत आंख न मइया,
बाप चिल्लालन दादा भइया।
चाय पिअत बाड़े बीबी संग,
गेंडवा आपन धुन रटत बाटेऽ। के से कहीं.....

चकचकात आपन सेजरिया,
गमगमात सभ घरे दुअरिया,
लेदरा गुदरा एने देखीं,
बूढ़ी बूढ़ा महकत बाटेऽ। के से कहीं.....

www.bhojpurisahityangan.com

ईतर पीटर एने मलाता,
दूनो देहँ ओने ककुलाला।
चलत जिलेबी पूड़ी एने
ओने ढांचा बइठत बाटेऽ । कै से कहीं.....

कहँ ध्यान कहँ माई- बाबू
अब बेटा ना हमरा काबू।
साँझे मेहरी महल बिराजस,
एने आँसू ढरकत बाटेऽ। के से कहीं.....
जोह लिआइल कयो न आ के,
चिठी लिखाता बहरी जाके
कइसन बाड़ू जल्दी लिखिहऽ,
बिने देखे मन तरसत बाटेऽ। के से कहीं.....

लागल ललसा तिअना चिखितीं
देखतीं बबुआ हिया जुड़इतीं।
पवलगी करिते मन भरित।
इहे चहत दम निकसत बाटेऽ। के से कहीं.....

- मैनपुरा, भोजपुर

टिप्पनी

'अत्रि' शब्द एगो वैदिक रिसी के नावँ के रूप में जानल जाला लेकिन ई शब्द 'अद्' धातु से निकलल बा जेकर अरथ ह 'खाना। एकर 'अंगार' अरथ में भी प्रयोग बा। भोजन के एक -एक कवर अंगारे के टुकड़ा होला। जठराग्नि के जगवले रहेला। गोआन भी अग्निए ह- ज्ञा नाग्नि। गीता/ वेद में-प्रिय मेधवत् अत्रिवत् जातवेदो विरूपवत् कहल बा. ऋ० १-३-३१/३ महर्षि लोग कहल कि एह अंगारन्ह से तिसरका रिखि के ढूँढ़ऽ जा, ढुंढला प इहे अत्रि मिललन। अत्रैव तृतीय मृच्छत इत्युचुः तस्मात अत्रि। जातवेद भी अग्नि के एगो पर्याय ह। अत्रि शब्द के कइगो अरथ कइल जा सकेला। 'न त्रय एवं अत्र ' (एहिजा तीनो गो नइखे।) एक के अनुव्यवहार से अत्रि नावँ पड़ल चाहें नत्रयः अत्रि। जेकरा में तीन ताप में एगुड़ो भी ना होखे ऊ अत्रि हा

एकर हिसाब-किताब बड़ा नीमन बा। पहिले-पहिल संकलप से सृष्टी भइल संकल्पात् सृष्टिः। उत्सर्गात् नारदो यज्ञे दक्षोऽगुष्ठात् स्वयम्भुवः। एह तरह से अर्चिषु भृगुर्बभूव (अर्चियन से भृगु भइलन) भृगु भृज्यमानः। अंगारेषु अंगिरा-अंगार से अंगिरा भइलन। भृगु आ अंगिरा के बाद तिसरका रिखि अत्रि अंगारे से भइलन। पृथिवी के भीतर के आग भूकंप के समया जबन निकलेला, ओकरो के अत्रि कहल जाला। खाए वाला के अत्रि कहल जाला। सभ के खाए वाला से भी एकर बोध होला। एह से ई अगिने ह ऋज़ीषे अत्रि मंश्विनाव नीतम्। अब व्याख्याता लोग के सुनीं। दयानंद जी अत्रि के अरथ अग्नि आ सायणजी अत्रि रिखि कइले बाड़न सायण 'सर्वगणमअत्रिम' कइले बाड़न। स्वामी दयानन्द 'सर्वगणं स्वस्ति' अन्वय कइके अरथ कर ताड़न- सुरूज आउर पृथ्वी भुइँ के नीचे पड़ल बीज के जमाके कुल्ही परजा के कलेआन कइलन। ई त भइल वैदिक अरथ। लौकिक अरथ देखीं। पुरानन में अत्रि के सप्तर्षियन में एगो रिखि मानल बा। इहाँ के ब्रह्मा के आँख से जनमल रहीं। इहाँ के हर मन्वंतर में प्रजापति आ सप्तर्षि के रूप

www.bhojpurisahityangan.com

में गईल। इहाँ के भारत के दक्खिन प्रांत के रहे वाला रहीं। अइसन तपेसवी कि एक बेरी राहु के आक्रमन से सुरूज देवता पृथिवी पर गिरे लगलन त इहे रिषि उनुका के गिरे से रोकलन। ब्रह्मा विष्णु आ महेस इनिका इहाँ पुत्र होके दत्तात्रेय, दुर्वासा आउर सोम के नावँ से जनम लेलन। इहाँ के लिखल अत्रि संहिता भी बा। गोसाई जी लिखले बानीं कि - अत्रि आदि मुनिवर बहु बसहीं। इहाँ के पत्नी के नावँ अनुसूया रहे। इहाँ के दक्ष के चउबीस कन्यन में से एगो रहीं' इहाँ के आराधना से खुस होके विष्णु दत्तात्रेय के रूप में, ब्रह्मा सोम के रूप में आ शिव दुर्वासा के रूप में पुत्र बनि के गोद में खेललन । मानस में सीता जी इनिका से मिलके पविरता के उपदेस सुनले बाड़ी। अनसूया के माने होला- जे दोसरा के गुन में दोस न देखे। जब ग्यान के अंगार भीतर घुस जाई त कुल्ही संसार के दोस अपना भीतर आ के जर जाई। तब सहायिका पत्नी अनसूया साथे भीतर कवनो ईर्ष्या द्वेष ना रहि जाई तब अत्रि ऊ अपने बनि जाई।

✪✪✪

- नकिति

जइसन के तइसन - नकिति

ई केहू भोजपुरी प्रेमी से छिपल नइखे कि पूरबी गीत के प्रवर्तक महेन्दर मिसिर, आशुकवि संगीतज्ञ, गीतकार आउर कीर्त्तन कार रहुअन। उहाँ के लोक नाटककार भिखारी के गीत संगीत देत रहनी। उनुकर उद्देश्य रहे राष्ट्रीय आंदोलन में अपना समाज के बनावे में जोगदान के। उनुका संगे गोपीचन नाँव के एगो सी.आई.डी. नोकर बनिके रह गइल कई बरिस आ उनुका के पकड़वा देलस। लेकिन साथ के असर त होइबे करे ला, महेन्दर मिसिर संगे उहो कवि बन गइल। जब उ जेल चलि गइलन त लिखलन-

पाकल पाकल पनवाँ खिअवले गोपीचनवाँ
पिरीतिआ लगा के भेजवबले जेल खनवाँ,

गोपीचन भी आसुकवि हो गइल रहे साथ में रहिके। लिखलस-

नोटवा जे छापी छापी गिनियाँ भँजवल हो महेन्दर मिसिर
ब्रिटिस के कइल हलकान, ए महेन्दर मिसिर
सगरी जहनवाँ में कइलऽ बड़ नावँ, ए महेन्दर मिसिर
पड़ल बा पुलिसवा से काम, ए महेन्दर मिसिर

✪

जइसन लागल, जवन बुझाइल

'सुरसती के जुलाई ०२ अंक मिलल। बड़ा निमन लागल पढ़के। सामग्री सभ ठीक टाक बा। साल में एगो बेलकुल शोध संबंधित आ विश्वस्तरीय कहानी के पत्रिका निकले, ई हमार सुझाव बा।

डॉ. प्रभुनाथ सिंह, विश्व भोजपुरी
सम्मेलन, नई दिल्ली-४१

'सुरसती के जुलाई ०२ अंक आजुवे मिलल, ह। भाषा प राउर संपादकीय बहुत आछा लागल। भाषा विचार आ व्याकरण पर राउर, लीक से अलग हटि के सोच आ लिख सकनी एकर सर्वोत्तम उदाहरण 'सुरसती' बा। एह अंक में पन्दोसीणांनंद जी आ आसिफ जी के गीत अभिव्यक्ति कौशल आ नया अंदाज का कारन मन के बन्हलस। ऊ लोग के बधाई।

भोजपुरी के शब्द संपदा स्तम्भ के आउर बढ़ करीं। हमरा ख्याल से ई सुरसती पत्रिका के विशिष्ट स्तंभ बनी, भोजपुरी खातिर राउर चिंतन मनन लगन आ काम सराहे जाग बा।

डॉ. अशोक द्विवेदी
संपा.पाती, टैगोर नगर, बलिया (उ० प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

नव रस के सागर हवऽ, सिव-रस के भंडार।
रचलऽ ग्रंथ अनेक तू, बाड़ऽ सुख के सार।।
उच्चकोटि के पत्रिका, पढ़ि 'सुरसति' पढ़ि पाय।
रस में डुबल बिभोर मन, जिअरा गइल जुड़ाय।।
शिक्षक हवऽ सुयोग्य मुँह, रस चाटल संसार।
निष्कामी, योगी,व्रती, हनुमत निअन उदार।।
बीस कोटि जन के प्रभा, तू धननी के लाल।
तहरे श्रम से हो गइल, माई बड़ खुसहाल''

देव कुमार मिश्र 'अलमस्त'
हेतमपुर, भोजपुर।

'सुरसती' के जुलाई ०२ मिलल। रउरा संपादकीय के एक-एक बात खूँटे गठियावे जोग बा। राम बचन लाल श्रीवास्तव आ कुंजन जी के कविता खास तौर पर पसंद आइल। स्थापित साहित्यकार पर केन्द्रित अंक निकलतीं त आछा होइत

रासबिहारी पांडेय
सहायक सं०- 'बराबर' पाक्षिक
मुम्बई, ४०००५६

'सुरसती' जुलाई ०२ मिलल। निहाल भइलीं। पत्रिका नीमन बिआ। देखत नीक पढ़त नीक। नीक -नेवहर, भाँति बिचार से पढ़ि 'सुरसती' के स्वागत कइ रहल बानीं। भोजपुरी के साथे मगह वाचन दही पर चीनी लेखा मनभावन। भोजपुरी के शब्द संपदा स्तंभ चलवला खातिर अपने के बेर-बेर अभिनंदन। ई चलत रहे के चाहीं। परती कोड़त, गोड़त रहीं आगे बढ़त रहीं।

डॉ. अनिल कुमार आंजनेय
अ० भारतीय अंतर जनपदीय परिषद्
उजियार, बलिया।

'सुरसती' के जुलाई ०२ मिलल। मोटा मोटी सभ पढ़ि गइलीं। राउर संपादकीय, स्वप्न व सवदत्ता के रूपान्तर, भोजपुरी के शब्द संपदा, हँसी चाहें रोई के एक एक डाँड़ि। छठवाँ आउर अठवाँ दोहा बड़ा आकर्षित कइलस। सुन्दर व्यंगी चोट बा भारत के नेता लोगन के आचरन पर। आचार्य मिश्र के सखा वाला संस्मरण भी रसदार बा।

(१)

बरदा के बर पाइके, लेखन बा बेजोड़।
इ भाषा आ बहुज्ञता, भला करी के होड़।

(२)

सरल सरस गंभीर भाव के यथा उचित सम्मिश्रण।
बहु व्यापक आयाम कथा के, व्यंगी लौकिक वीक्षण।।

(३)

दावाँ बावाँ दुनो हाँथ के, लेखन गुण 'नकितीय'।
कतहूँ हलुक फुलुक बाटे त, कहुँ बहुते विदर्णाय।।।
दीया से दीया जरे, काव्य रचावे काव्य।
साधू संगे साधु बा, सहजे ई सम्भाव्य।

डॉ. विश्वंभर नाथ पांडेय
पूर्व प्राचार्य, राँची कॉलेज,
लोहरदगा, (झारखंड)

www.bhojpurisahityangan.com

एफ -१५२, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१

'विद्यार्थी' जी से 'सुरसती' मिलल। भोजपुरी भासा अइसहीं कोइल के 'कूक' ह, ओह पर राउर फूँक आ भाई लोग के ताल फिर मिठास के का कहे के बा। भोजपुरी भाषा के अइसन बगइचा लगाईं कि ओकर फेंड़ बराबर काएम रहे। जेइसे कोइलर के कूक कबो ओराये मत

धर्मेन्द्र कुमार मिश्र
मिश्र बीघा, रेसरी, गया।

हँसिनि गइल बिदेस' पढ़िके, आतमा दम भर बिलखल आ सुसुकल। अजुओ पढ़तानी त घाव खुनिया जाता। एह लोक में इहे होला। लेकिन मन कहाँ समुझत बा।

'विद्यार्थी' गिरिडीह।

'सुरसती' के तिसरका अंक बेलकुल झकास बा। रउरा बारे में सुने के मिलल रहे लेकिन सुरसती में झाँक के ऊ रूप देख लिहलीं। चउथका अंक खातिर ललायित बानीं।

विष्णुदेव सिंह,
बरमसिया,(झारखंड)

माँ सुरसती के कृपा से 'सुरसती मिलली' आ राउर आशीर्वाद भी, हमरा संतोष बा कि रउआ भुलाइल नइखीं।

राउर गंभीर संपादकीय एक ओरे मन के गहराई में डूबे के मजबूर कइलस आ दोसरा ओरे 'विद्यार्थी' के 'चइती बयार' तन मन के सिरसिका देलस, बरमेश्वर सिंह के दोहा, शिवानंदजी के भीतर के अनुभूति, राउर शब्द संपदा आदि सामग्री विचारोत्तेजक बाड़ीसन। कुल मिलाके 'सुरसती' साहित्य आ अध्यात्म के अभिन्न रूप बा।

अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष'
जमशेदपुर -८

'सुरसती जुलाई ०२ मिलल। रउआ अपना संपादकीय में बिना इचिको घिंघोरले बड़ा कुशलता से भासा के सँवारि रहल बानीं। संस्कृत के कथा साहित्य के भोजपुरी अनुवाद चलत रहे के चाहीं। शब्द संपदा के विवेचना शोधपूर्ण सराहनीय बा। 'चइती बेआर' ललित ललाम बा। गद्य के अंश बढ़े के चाहीं। ई पत्रिका कुछ सार्थक करिये के दम लीही, अइसन बिसवास करे के कारन बा।

बरमेश्वर सिंह, धनडीहा, भोजपुर

'सुरसती' के अंक मिलल। विप्रजी के 'इन्टरव्यू' ले ले बानीं, छाप दीहीं। पत्रिका के विषय में एकरा बाद लिखब।

डॉ. रामरक्षा मिश्र 'विमल'
उदयन पल्ली, चौबीस परगना कोलकाता-४४

'सुरसती' के तिसरका अंक मिलल । नीमन लागल। जइसन नाम तइसन काम। जइसन रूप तइसन गंध। पोढ़ पुष्ट शाधन से टोकल, टेटावल। स्वप्नवासवदत्ता देख के आछा लागल। बरमेसर भाई के दोहा, संघलहरी खुब नीमन बा।.... असहीं आवसु सुरसती जी रसवती बनि के, इहे साध, सपना आ मन के कामना बा।

सुरेश काँटक, काँट, भोजपुर।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

ज्ञान विग्यान के भासा ह मातृ भासा

जइसे अपना मतारी, मेहरारू के गुण ना लउके ओसहीं मातृभासों के भी समुझल जाव अंतर्परिचय वाला दोस ग्रसेला माई के मुअला प, मेहरारू के कुछ दिन नइहर गइला पर महत्व समुझ में आवेला, ओसहीं चिंतन करत, बिदेस में गइला प, गूढ़ विषय के अर्थ ढूंढ़े के बेरी मातृभासा के महत्व समने आवेला। एही से मातृभासा अतमा के भासा ह। विपत में पड़ला प, लात जूता खात किरोध में माई के बोलिए में वकार चाहे हंकार निकले ला। जइसे कवनो भगत के लइका जोरे परेम 'नरायन' बनि के भगवान के पुकार होखे गइल बन। महतमा लोग आपन बानी अपना माइए के भासा में अनले कहले बा। हिन्दी - भोजपुरी के सभ संतन के बानी ऊ लोग के आपन माई के भासा में पूर्न रूप से परगट भइल। कबीर, नानक, दरिया, दादू कुल्ही सन्तन के बानी एकर परमान बा। खाली इहे लोग ना मराठी, बंगला सभ भासा के संत कबिअन के एगुड़े हाल बा। महातमा बुद्ध के सभ बचन पाली में बा एकर मतलब कि विशुद्ध आचरण जब बानी में घोरा जाई त ऊ मीठे लागी। सन्त अपना के जरावे ले आ सभका के रोशनी देले। ऊ लोग इहो ना विचार करे कि कवना कोना के अन्हार गइसे कतना दूर होई। न डींगे मारस कि हम हतना अन्हरिया दूर कइलीं, आव ऽ हमरा सरन। एह भौतिक दुनियाँ से अलग उनुकर संसार बा। आपन भासा परेम के भासा ह, हृदया के भासा ह। मतारी परेम के आदर्श सरूप हई। एगो दोसरे उनुका बाद परेम सरूप बाड़न। एही से भगत सभका के बाँध लेलन। साधु के घर के सुगा भी राम कहेला। मराठी भासा के सभ सन्त 'अभंग' लिखल न। अभंग मराठी के छन्द ह। का ग्यानेश्वर का नाम देव, का एकनाथ, आ का तुकाराम सभे मातृभासा में आपन बात, परमतमा के बात कहल देस के मुसलमान आक्रामकन से राछा कइल। बीरन के भगत आ भगतन के बीर बनावल। आजु सभ से बाऊर बा त ऊ आपन भासा, आपन माई, भाई आ बड़लोगन खातिर आपन मेहरारू। ई कुल्ही मरे के बेरी चाहे मुअला प इयाद करे के चीझ हो गइल बा। लइकन के अंगरेजी सिखावे में चउदह बरिस लाग जाला। अतना में कवनो राम रावन के फतह करिके पूरा देश में रामराज अकेले कायम कर दीहन। एने अंगरेजी पढ़ि के कवनो बबुआ शेक्सपिअर ना भइलन। कबो ना होइहें। भासा जानि के दोसरा के ठगहन, ठगइहें। वकील बनिके अनिआव के जितइहें। सत के धरम पर अंगरेजी पढ़ि के एगो गान्ही के सिवा दोसर कहाँ लउकत बा जे ठहरी। माई के भासा बोले वाला कबो बेइमान ना हो सके। कायर आ बदचलन ना हो सके। भीतर से परेम करेवाला के गोड़ बेजगहा ना परि सके। तन मन धन से अइसने अदिमी देश के सेवा करेला। बड़का से बड़का झुट्ठा माई के समने साँच उगिल देला। अइसहीं माई के बोली में झुठ बोलाइए ना सके। अतमा के भासा आपन मातृभासा ह। भले जानकारी दोसरा भासा से होखे लेकिन ग्यान -विग्यान त अपने भासा के जानकारी से हो सकेला। कृस्न जी के गीता उनुका भासा में निकलल आ संतन के वेद अपना भासा में हमनी के साँच बात अपना मातृभसे में निकली। घरे सभ केहू सतुआ माँग के खाए चाहें पीएला। बहरी जाके ओह में उच्चारन चाहें दोसरा भासा के पुट देके अपना के अउरी गाँहक से अलगा करे खातिर फुटानी छाँटेला। सतुआ पर विचार करेवाला ओकर स्रोत खोजी खाए-पीए वाला के ओकरा स्रोत से का मतलब? संसकिरतके विद्वान कहिहन- सक्तु (सच्ज-तुन-किच्च) भर्तृहरि कहिहन-भिक्षा सक्तु मिरेव संप्रति वयं। सतुआ खाए वाला रोज सतुए खाता। ओद आ सुखा लकड़ी पर खाए बनावता लेकिन ओद कहवाँ से शब्द आइल एकर धेआन नइखे। एगो वकील ओद के बारे में कहलन आर्द्र से निकलल बा। अगर उनुकर ग्यान जादा होइत त 'अबोद' कहितन। नीमन शब्द होखे चाहें जबून (फारसी-जोबूं) ह त मतारी के मुँह से निकलल, जवना दूध में दाल-भात तिअना कुल्ही मिलल बा। ओह में हमार संस्कृति आ सनातन धरम, साहित्य के कुल्ही तत्व मिलल बा। बनते बा ओही से। राजनीति कइके भासा साहित्य के ना बनावल, बचावल जा सके। साधना से ओकर लच्छन समुझले जा सकेला।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद् के दुर्लभ गौरव ग्रंथ

भोजपुरी काव्य-

कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन' के कुल्ही किताब प्रकाशित होखे जा रहलवा।

१ सीता के लाल - रस बुनियाँ। कुरकुरहट।

कुंजन रामायन	:	कुंजबिहारी प्रसाद 'कुंजन'।
चिरई	:	फंदोत्तीर्णानंद पुरी।
सुमिरनी	:	रामप्रवेस पांडे
बच्चन रचनावली	:	राधिका रमण शर्मा बच्चन (हिन्दी में)
सतवादी हरिश्चंद्र	:	विद्याशंकर 'विद्यार्थी
अप्रतिम योद्धा कुँअर सिंह	:	डॉ० जीउत तिवारी 'सरल'

संस्कृत भाषा के पहिलका नाटककार महाकवि 'भास' के सभ तेरहो नाटक के प्रामाणिक भोजपुरी भाषा में अनुवादन-

प्रतिमा	:	नन्दकिशोर तिवारी
सपन सुनरी	:	नन्दकिशोर तिवारी
अभिषेक	:	नन्दकिशोर तिवारी
दूतवाक्य	:	नन्दकिशोर तिवारी
ऊरुभंग	:	नन्दकिशोर तिवारी
कर्णभार	:	नन्दकिशोर तिवारी
बालचरित	:	नन्दकिशोर तिवारी
प्रतिज्ञा यौगंधरायण	:	नन्दकिशोर तिवारी
पंचरात्र	:	नन्दकिशोर तिवारी
दूत घटोत्कच	:	नन्दकिशोर तिवारी
चारुदत्त	:	नन्दकिशोर तिवारी
मध्यम व्यायोग	:	नन्दकिशोर तिवारी
अविमारक	:	नन्दकिशोर तिवारी

ललित निबन्ध : बतकही : डॉ० नन्दकिशोर तिवारी

प्रकाशक : रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद्

सहसराम, रोहतास (बिहार)